'मण्डल' द्वारा प्रकाशित
उपन्यास साहित्य

- मोगरा फूला
- पद्मिनी का शाप
- आंचल और आग
- धूपछांह
- गौरप्रिया
- लहरों के बीच
- विराट
- अन्धा मन
- प्रकाश की छाया में
- नियति के पुतले
- बदलाव
- अपराजिता
- अन्तहीन अंत
- प्रेम की देवी
- मेघ मल्हार
- सुल्तान और निहालदे
- अथाह की थाह
- जिंदगी दांव पर
- भाग्य की विडम्बना
- प्रेम और प्रकाश

सस्ता साहित्य मण्डल

सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन

प्रेम और प्रकाश

प्रेम और प्रकाश

आन्द्रे जीद

प्रेम और प्रकाश

मानवीय पृष्ठभूमि पर लिखित
हृदयस्पर्शी उपन्यास

•

लेखक
आन्द्रे जीद

अनुवादिका
अन्नदा पाटनी

•

१९९१
सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन

प्रकाशक
यशपाल जैन
मंत्री, सस्ता साहित्य मण्डल
एन ७७, कनाट सर्कस, नई दिल्ली ११०००१

दूसरी बार : १९९१
मूल्य : रु० १५.००

मुद्रक
बत्रा आर्ट प्रिन्टर्स
नरायणा, नई दिल्ली-११० ०२८

प्रकाशकीय

आंद्रे जीद की गणना संसार के महान उपन्यासकारों में की जाती है। उनकी पुस्तकों के विश्व की अनेक भाषाओं में अनुवाद हुए हैं। भारत के बहुत-से पाठक भी उनसे भली भांति परिचित हैं। उनकी अनेक रचनाओं के रूपान्तर भारतीय भाषाओं में हुए हैं। सन् १९४७ में उन्हें नोबुल पुरस्कार प्राप्त हुआ था।

आंद्रे जीद की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उनका दृष्टिकोण मुख्यतः मानवीय है। उनकी कहानियों, उपन्यासों आदि में मानव की भावनाओं के उतार-चढ़ाव का मर्म-स्पर्शी वर्णन रहता है। अपनी रचनाओं में वे ऐसे चित्र प्रस्तुत करते हैं कि उन्हें पढ़कर पाठक विचलित हुए बिना नहीं रहता।

इस पुस्तक में हम उनके सुविख्यात उपन्यास 'पास्टोरल सिम्फ़नी' का हिन्दी रूपान्तर दे रहे हैं। इसमें एक नेत्रहीन लड़की के प्रति एक उदार पादरी की करुणा, कर्त्तव्य-परायणता तथा प्रेम की कहानी है। वह किस प्रकार आकस्मिक रूप में उस लड़की को पाता है, किस कठिनाई से वह उसकी देखभाल करता है, किस धैर्य से वह उसकी सुप्त चेतना को जाग्रत करता है और किस प्रकार वह उसमें विस्मयजनक क्षमता उत्पन्न करता है, इस सबका अत्यन्त हृदयग्राही वर्णन उन्होंने इस छोटे-से उपन्यास में किया है।

रचना का अन्त बड़ा मार्मिक है। वह पाठक के मन पर गहरा प्रभाव डालता है।

'मण्डल' ने वैसे कई उपन्यास निकाले हैं, लेकिन संसार के चुने हुए लघु उपन्यासों की हमारी माला में यह चौथा उपन्यास है। पहला उपन्यास था विश्वविख्यात लेखक स्टीफन ज्विग का 'विराट', दूसरा उसी कोटि के लेखक तुर्गनेव का 'स्वाभिमानी' और उन्हींका एक और उपन्यास 'प्रेम-प्रपंच।'

हमें विश्वास है कि यह तथा इस माला के अन्य उपन्यास पाठकों द्वारा चाव से पढ़े जायंगे। आगे और भी ऐसे कुछ उपन्यास प्रकाशित करने की योजना है।

—मंत्री

दो शब्द

कई साल पहले इंदौर-निवासी मेरे स्नेही बंधु श्री राजेन्द्र कुमार सेठी ने आंद्रे जीद की इस रचना की ओर मेरा ध्यान खींचा था और आग्रह किया था कि मैं इसे अवश्य पढ़ूं। साथ ही उन्होंने यह भी इच्छा जतलाई थी कि हिन्दी में इस प्रकार की चीजें आनी चाहिए। उपन्यास को मैंने उसी समय पढ़ डाला। सच यह है कि एक बार आरम्भ करने पर मैं उसे छोड़ नहीं सका। मानव की आंतरिक भावनाओं का इतना सुन्दर चित्रण कम ही रचनाओं में मिलता है। सामान्य-सा कथानक लेकर लेखक ने उसका ताना-बाना इस कुशलता से बुना है कि नई-नई परिस्थितियां पैदा होती हैं और पाठक कुतूहल और विह्वलता के साथ उनमें खोया रहता है। छोटे-से पटल पर यह सब करना वास्तव में बहुत ही कठिन है और इस लघु उपन्यास की यही सबसे बड़ी खूबी है। पाठक कहीं भी ऊबने नहीं पाता।

उपन्यास समाप्त करने के उपरान्त मेरी स्वयं की इच्छा हुई कि इसका लाभ हिन्दी के पाठकों को मिलना चाहिए, लेकिन कुछ तो व्यस्तता और कुछ प्रमाद के कारण मैं अनुवाद नहीं कर पाया। समय निकलता गया, पर बात मन से दूर नहीं हो सकी।

पिछले दिनों अचानक मैंने अपनी लड़की सौ० अन्नदा से इस बारे में चर्चा की और चाहा कि वह इस काम को कर दे। उसने उपन्यास पढ़ा और उसे इतना अच्छा लगा कि वह तत्काल अनुवाद करने में जुट गई। अनुवाद पूरा हुआ और जब मैंने उसे पढ़ा तो मुझे आश्चर्यमिश्रित हर्ष हुआ। उसने यह कार्य बहुत ही जिम्मेदारी और प्रामाणिकता से किया था।

मेरी इच्छा पूर्ण हुई, इससे मुझे सन्तोष होना स्वाभाविक था।

अनुवाद धारावाहिक रूप से 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान' में प्रकाशित हुआ और उसके सम्बन्ध में अनेक साहित्यानुरागी पाठकों के उत्साहवर्द्धक पत्र आये।

मुझे बड़ी प्रसन्नता है कि अब यह उत्कृष्ट कृति पुस्तक के रूप में पाठकों के हाथों में पहुंच रही है। मुझे विश्वास है कि हिन्दी-प्रेमी इसे रुचि-पूर्वक पढ़ेंगे और इसका सभी क्षेत्रों में स्वागत होगा।

७/८, दरियागंज,
नई दिल्ली-११०००२

—यशपाल जैन

प्रेम
और
प्रकाश
•

१/

१० फरवरी १८९...

तीन दिन से लगातार बर्फ पड़ रही है और सारे रास्ते बन्द हो गए हैं। 'र'...जाना मेरे लिए असंभव हो गया है, जहां पिछले पन्द्रह सालों से मैं महीने में बराबर दो बार प्रार्थना करता आ रहा हूं।

इस जबर्दस्ती की फुरसत से मैं लाभ उठाऊंगा और बीते दिनों की याद करके यह सोचूंगा कि उस अंधी लड़की गरट्रूड को मैंने किस तरह अपने संरक्षण में लिया था और किस तरह उसके शेष जीवन का निर्माण तथा विकास हुआ था।

कोई ढाई साल पहले की बात है। एक दिन दोपहर बाद मैं ला शॉ द फ़ोन्डस से लौटा ही था कि एक छोटी-सी लड़की, जो मेरे लिए अजनबी थी, बड़ी जल्दी में आई और मुझसे पांच मील दूर एक जगह चलने का आग्रह करने लगी। बोली, "झटपट चलिये। वहां एक बुढ़िया अपनी आखिरी सांसें गिन रही है।" मेरा घोड़ा अभी जुता खड़ा था, सो उस बालिका से गाड़ी में बैठने को कहकर मैं फौरन वहां से चल दिया। चलने से पहले मैंने एक लालटेन साथ में ले ली, क्योंकि मैंने सोचा कि बहुत संभव है,

अंधेरा होने से पहले लौटना न हो सके।

मैंने मान रखा था कि अपने गिरजाघर के आस-पास के पूरे इलाके से मैं अच्छी तरह परिचित हूं, लेकिन ज्योंही हमने ला सौंड्रे फार्म को पार किया, उस बालिका ने एक ऐसी सड़क पर गाड़ी ले चलने को कहा, जिसपर मैंने पहले कभी पैर नहीं रखा था। लगभग दो मील निकल जाने पर मैंने बाईं ओर की उस छोटी-सी रहस्यमयी झील को पहचाना, जहां बचपन में मैं कभी-कभी स्केटिंग के लिए जाया करता था। पन्द्रह साल से मैंने उसे नहीं देखा था, क्योंकि एक पादरी की हैसियत से मुझे उस ओर जाने का कभी कोई काम ही नहीं पड़ा था। वह झील मेरे दिमाग से इतनी उतर चुकी थी कि जब मैंने उसे अचानक संध्या के गुलाबी आकाश की स्वर्णिम आभा में देखा तब मुझे लगा, जैसे पहले मैंने उसे कभी सपने में देखा हो।

झील से पानी की धारा निकलकर जंगल के छोर तक गई थी और फिर एक दलदल में आकर समाप्त हो गई थी। सड़क इस धारा के किनारे-किनारे जा रही थी। निश्चय ही, इस जगह को मैंने पहले कभी नहीं देखा था।

सूरज डूब रहा था। बहुत देर तक हम लोग चुपचाप आगे बढ़ते रहे। फिर एकाएक मेरी उस नन्हीं मार्गदर्शिका ने पहाड़ी पर बने एक मकान की ओर संकेत किया, जिसकी चिमनी से धुएं की एक पतली-सी रेखा उठ रही थी। उस रेखा का रंग नीला था, लेकिन सुनहरे आकाश तक पहुंचते-पहुंचते वह सफेद हो उठी थी। मैंने घोड़े को पास के सेब के पेड़ से बांध दिया और बालिका के पीछे-पीछे उस अंधेरे कमरे में गया, जहां उस बुढ़िया ने

अभी-अभी अपनी आंखें सदा के लिए मूंद ली थीं।

वहां के दृश्य को देखकर मेरा हृदय अभिभूत हो गया। एक स्त्री, जो अभी भी जवान दिखाई देती थी, पलंग के पास घुटनों के बल झुकी हुई थी। उस बालिका ने, जिसे मैंने मृत स्त्री की पोती समझ रखा था, लेकिन जो थी वास्तव में उसकी नौकरानी, धुएं से काली बत्ती जलाई और फिर पलंग के पास वह बुत की तरह खड़ी हो गई। आते समय लंबे रास्ते में मैंने इस बात की बड़ी कोशिश की थी कि वह कुछ कहे, लेकिन उससे दो शब्द भी कहलवाने में मुझे सफलता नहीं मिली थी।

घुटनों के बल झुकी स्त्री उठी। वह मृत स्त्री की कोई रिश्तेदारनी नहीं थी, जैसा कि पहले मुझे लगा था; बल्कि वह पड़ोसिन थी—एक दोस्त, जिसे वह नौकरानी अपनी मालकिन को दम तोड़ते देखकर बुला लाई थी और जिसने उस मृतक शरीर की देखभाल की जिम्मेदारी अपने ऊपर ले रखी थी। उसने कहा, "यह बुढ़िया बिना किसी तकलीफ के चली गई।"

अब यह निश्चय करना था कि बुढ़िया की अन्त्येष्टि की क्या व्यवस्था की जाय और किस प्रकार सारी विधियां सम्पन्न हों। उस पिछड़े प्रदेश में प्रायः सभी बातों को तय करने की जिम्मेदारी मुझपर ही आती थी। वह घर बड़ी ही गरीबी की हालत में दिखाई पड़ता था, फिर भी उसे उस पड़ोसिन और उस छोटी-सी नौकरानी के ऊपर छोड़ने में मुझे थोड़ी बेचैनी मालूम हुई। पर वैसा करने के अलावा मेरे और पास कोई चारा भी तो नहीं था। फिर भी मैंने पूछा, "क्या इस बुढ़िया का कोई वारिस नहीं है ?"

इसपर उस स्त्री ने बत्ती हाथ में ली और इतनी ऊपर उठाई कि अंगीठी का कोना चमक उठा। उस रोशनी में मैंने देखा कि अंगीठी के पास सिकुड़ा-सिकुड़ाया कोई प्राणी बैठा है, जो सोता जान पड़ता है और जिसका पूरा चेहरा घने बालों से ढका है।

"वह रही अंधी लड़की। इस नौकरानी का कहना है कि वह इस बुढ़िया की भतीजी है। जान पड़ता है, सारे घर में बस यही बची है। इसे अनाथालय में भेज देना चाहिए।"

उस बेचारी के भविष्य का इस तरह उसीके सामने निबटारा कर देने की बात सुनकर मुझे बड़ा धक्का लगा और मैंने सोचा कि ऐसे कठोर शब्द सुनकर उसे अवश्य ही गहरी पीड़ा हुई होगी।

"उसे मत जगाओ," मैंने धीरे-से कहा, मानो उस स्त्री के लिए यह एक संकेत हो कि वह अपनी आवाज को कुछ धीमा करे।

"लेकिन वह सो नहीं रही है। मुझे बताया गया है कि वह न कुछ बोल सकती है, न कुछ समझ सकती है। सवेरे से मैं इस कमरे में हूं, पर यह हिली-डुली तक नहीं है। पहले मैंने सोचा कि शायद यह बहरी है, लेकिन इस नौकरानी का कहना है कि वह बहरी नहीं है, बल्कि वह बूढ़ी स्त्री स्वयं बहरी थी और उसने कभी इस लड़की से एक शब्द भी नहीं कहा। बहुत समय तक तो इस लड़की ने खाने-पीने के अलावा कभी अपना मुंह ही नहीं खोला।"

"इसकी उम्र कितनी होगी ?"

"मेरे ख्याल से यही कोई पंद्रह के आस-पास होगी।"

तत्काल तो मुझे यह नहीं सूझा कि उस बेचारे परित्यक्त प्राणी को मैं अपनी देख-रेख में ले लूं, लेकिन प्रार्थना के बाद—या यह कहना अधिक सही होगा कि जिस समय मैं उस स्त्री और नन्हीं नौकरानी के बीच झुका हुआ प्रार्थना कर रहा था, अचानक मुझे अनुभव हुआ कि प्रभु ने मेरे ऊपर यह एक जिम्मेदारी डाल दी है और यदि मैं इससे बचूंगा तो वह मेरी कायरता होगी।

प्रार्थना से उठते-उठते मैंने निश्चय कर लिया कि उसी शाम को मैं उस लड़की को अपने साथ ले जाऊंगा, हालांकि मैंने यह नहीं सोचा कि बाद में मैं उसका क्या करूंगा या उसे किसकी देख-रेख में रखूंगा। कुछ क्षण वहां और रुककर मैं उस बूढ़ी स्त्री के सुप्त चेहरे को देखता रहा—उसके संकुचित मुंह को, जो कंजूस की उस थैली जैसा लग रहा था, जिसका मुंह कसकर बांध दिया गया हो, ताकि उसमें से कुछ निकल न जाय। इसके बाद उस नेत्रहीन लड़की की ओर मुड़कर मैंने पड़ोसिन को अपनी इच्छा जतलाई।

"हां, यही ठीक है कि कल लोग जब इस मुर्दे को उठाने आवें, उससे पहले ही यह यहां से चली जाय।" पड़ोसिन ने कहा और चुप हो गई।

एक निर्जीव लोथड़े की भांति उस लड़की ने अपने को मुझे ले जाने दिया। उसके चेहरे का आकार-प्रकार ठीक था, बल्कि सुघड़ था, लेकिन एकदम भाव-शून्य।

कमरे से ऊपर की ओर जाते हुए जीने के नीचे कोने में पड़े

बिछौने पर से, जिस पर वह सोया करती होगी, मैंने एक कंबल उठा लिया।

पड़ोसिन भली थी। उसने सावधानी से उस लड़की को कंबल उढ़ाने में मदद दी। रात बड़ी ही सर्द थी। मैंने गाड़ी की बत्ती जलाई और लड़की को साथ लेकर घर की ओर रवाना हुआ। वह मेरे पास सिकुड़ी बैठी थी, मानो मांस का एक बेजान लोथड़ा हो और जिसमें थोड़ी गरमी के सिवा जीवन का कोई चिह्न बाकी न हो। सारे रास्ते मैं सोचता रहा—"क्या यह सो रही है? आखिर है यह कैसी? इसके जागने और सोने के क्षणों में क्या अन्तर है?...हे प्रभो, बन्धन में जकड़ी आत्मा तेरी करुणा की कोर के लिए प्रतीक्षा कर रही है। भगवन, इसपर अपना वरद हस्त रखो। शायद तुम्हारी कृपा से मेरा प्रेम इसके भयंकर अंधकार को दूर कर दे।..."

२

सत्य के प्रति मेरी बड़ी गहरी आस्था है। इसलिए मैं यह छिपाऊंगा नहीं कि घर पहुंचने पर मुझे बड़े ही अप्रिय स्वागत का सामना करना पड़ा। मेरी पत्नी बड़ी गुणवती है और मुसीबत के क्षणों में कभी मुझे यह सन्देह करने का अवसर नहीं मिला कि उसका हृदय दयालु नहीं है। वह बहुत ही व्यवस्थित है और अपने कर्तव्य के बारे में इतनी सावधान है कि न उससे कभी आगे बढ़ती है, न पीछे जाती है। पर उसकी दान-शीलता बहुत नपी-तुली है, जैसे प्रेम की निधि असीम न हो। बस, यही एक चीज है, जिसपर हम दोनों में मतभेद है।...

उस संध्या को जब उसने मुझे उस लड़की को घर लाते देखा तब वह बोल उठी, "तुमने यह कैसा झंझट अपने सिर पर ले लिया है?"

जैसा कि हमेशा होता है, मैंने बच्चों से, जो हमारे चारों ओर मुंह बाये उत्सुकता और आश्चर्य से भरे खड़े थे, कहा कि वे कमरे से बाहर चले जायं। ओह! मेरी इच्छा से कितना भिन्न स्वागत था वह! केवल मेरी छोटी-सी शारलट उस नये प्राणी को गाड़ी से उतरते देखकर नाचने और ताली बजाने

लगी थी। लेकिन दूसरे बच्चों ने, जिनको उनकी मां ने पूरी तरह से उस्ताद बना रखा था, फौरन उसकी खुशी पर पानी फेर दिया और उसे अपने साथ मिला लिया।

एक क्षण तक कुछ समझ में न आया। न तो मेरी पत्नी को और न मेरे बच्चों को पता था कि मैं जिसे लाया हूं, वह एक निपट अंधा प्राणी है, इसलिए वे उस अतिशय सावधानी का अनुमान नहीं लगा सकते थे, जिससे मैं उसे सहारा देकर ला रहा था। अपने पूरे सफर के दौरान मैंने उसका हाथ अपने हाथ में थामे रखा था। जैसे ही मैंने उसका हाथ छोड़ा, उस दुखिया ने अजीब ढंग से कराहना शुरू कर दिया। उसके इस कराहने से मैं बेचैन हो उठा। उसके मुंह से जो ध्वनि फूट रही थी, वह आदमी की-सी नहीं थी, बल्कि पिल्ले की 'कूं-कूं' से अधिक मिलती-जुलती थी। जब पहली बार उसका संबंध उसकी स्वाभाविक चेतना के उस तंग दायरे से टूटा, जिसमें उसकी दुनिया समाई हुई थी, तो उसके घुटनों ने जवाब दे दिया, और जब मैंने उसके आगे एक कुर्सी सरकाई, तब वह फर्श पर धड़ाम-से गिर पड़ी, मानो बैठने में अशक्त हो। मैं उसे अंगीठी तक ले गया, जहां वह सिकुड़कर ठीक वैसी ही अवस्था में बैठ गई, जिस अवस्था में मैंने उसे पहली बार बूढ़ी स्त्री की अंगीठी के पास चिमनी के सहारे बैठे देखा था। इस तरह बैठने पर वह कुछ सुस्थिर हुई। गाड़ी में भी वह सीट पर से फिसल गई थी और सारे रास्ते मेरे पास सिकुड़ी बैठी रही थी। मेरी स्त्री, जिसकी स्वाभाविक भावनाएं सदा ऊंचे दर्जे की रही हैं, मेरी मदद को आई। पत्नी के विचारों और हृदय में सदा तनातनी रहती है, पर अक्सर उसका हृदय पिघल-

कर ही रहता है।

जब बालिका आराम से बैठ गई, तब पत्नी ने पूछा, "अब तुम इसका क्या करना चाहते हो?"

'इसका' शब्द कुछ इस ढंग से कहा गया था कि मैं अन्दर-ही-अन्दर कांप उठा और अपने क्रोध पर काबू रखने में मुझे कुछ कठिनाई हुई। लेकिन चूंकि मेरे मन में अभी तक शान्तिपूर्ण चिंतन का प्रभाव शेष था, मैंने अपने को सम्हाल लिया। सारी टोली की ओर, जो गोल दायरा बनाये खड़ी थी, अभिमुख होकर मैंने अपना हाथ अन्धी बालिका के सिर पर रखा और जितनी गम्भीरता से बोल सकता था, बोला, "मैं खोई भेड़ को वापस ले आया हूं।"[१]

परन्तु एमिली ने स्वीकार नहीं किया कि बाइबिल की शिक्षा में कोई ऐसी भी बात हो सकती है, जिसे अनुचित अथवा अति-उचित कहा जा सके। मैंने देखा कि वह मेरी बात पर आपत्ति उठानेवाली थी, इसलिए मैंने जैक्स और सारा को संकेत किया और वे दोनों छोटे बच्चों को लेकर कमरे से बाहर चले गये। वे हमारे छोटे-मोटे मतभेदों से परिचित थे और उन झगड़ों के जानने के बारे में उनमें कोई उत्सुकता नहीं थी। मेरी पत्नी अभी तक चुप और झुंझलाई हुई थी। मैंने सोचा कि उसकी चुप्पी नवागन्तुक की उपस्थिति की वजह से है, इसलिए मैंने कहा, "तुम्हें इसके सामने कुछ भी कहने में हिचकने की जरूरत नहीं। यह

१ इसमें बाइबिल की एक कथा की ओर संकेत है, जो आगे स्पष्ट हो जाती है।—अनु०

बेचारी कुछ समझती ही नहीं।"

मेरे इतना कहने पर एमिली प्रतिकार करती हुई बोली, "नहीं, मुझे कुछ नहीं कहना।" यह उसकी लम्बी टीकाओं की सदा की भूमिका थी। पर सिवा इसके कि वह मेरी सारी अव्यावहारिक सनकों के आगे झुक जाय—भले ही ये सनकें परम्परा तथा विवेक के कितनी ही विपरीत क्यों न हों—उसके लिए और कोई रास्ता भी तो न था। मैं पहले ही कह चुका हूं कि मैंने ज़रा भी नहीं सोचा था कि मैं उस बालिका का आगे क्या करूंगा। मुझे यह सूझा ही नहीं था और सूझा भी होगा तो बहुत क्षीण रूप में कि उसे स्थायी रूप से अपने घर में रखने की भी कोई सम्भावना हो सकती है। मैं कह सकता हूं कि मेरे दिमाग में यह बात सबसे पहले एमिली ने पैदा की, जबकि उसने कहा, "तुम यह क्यों नहीं सोचते कि घर में हम पहले से ही काफी लोग हैं?" फिर उसने कहा, "तुम तो हमेशा हवा में उड़ते रहते हो। यह नहीं सोचते कि जो तुम्हारे साथ हैं वे इतना तेज उड़ सकते हैं या नहीं। जहां तक मेरा सवाल है, मैं सोचती हूं कि पांच बच्चे काफी हैं और जब से क्लॉड हुआ है (उसी समय पालने में से क्लॉड चीख उठा, मानो उसने अपना नाम सुन लिया हो) तब से तो मुझे लगता है कि बस, इससे ज्यादा बोझ मैं नहीं उठा सकती।"

जिस समय पत्नी का पारा चढ़ रहा था, मेरे हृदय से प्रभु यीशु के कुछ शब्द उठकर होठों तक आए, लेकिन मैंने उन्हें बाहर नहीं निकलने दिया, क्योंकि मुझे यह उचित नहीं लगा कि अपने आचरण के समर्थन में मैं बाइबिल का सहारा लूं। लेकिन जब उसने अपनी थकान की बात कही, तब मेरा मन

विभ्रम में पड़ गया। मैं मानता हूँ कि एक से अधिक बार मेरे आवेश-भरे तथा बेसोचे-समझे उत्साह से मेरी पत्नी को मुसीबत उठानी पड़ी है। इस बीच उसकी कहा-सुनी से मुझे अपने कर्तव्य का भान हुआ। इसलिए मैंने एमिली से बड़ी विनम्रता के साथ कहा, "सोचो, अगर तुम मेरी जगह होतीं तो क्या वही न करतीं, जो मैंने किया है और क्या इस प्राणी को, जो इस तरह बिना किसीके सहारे के रह गया था, योंही छोड़ देतीं?" मैंने यह भी कहा कि मुझे इस बात का ख्याल नहीं था कि इस नवागन्तुक के संरक्षण से अतिरिक्त बोझ बढ़ेगा और घर की चिन्ताओं में वृद्धि होगी। मैंने इस बात पर खेद प्रकट किया कि इन चिन्ताओं में मैं प्रायः उसका हाथ नहीं बंटा पाता। इस प्रकार मैं जितनी अच्छी तरह से उसे शान्त कर सकता था, मैंने किया। मैंने उससे अनुरोध किया कि वह उस मासूम लड़की पर अपना क्रोध न उतारे। फिर मैंने उसे समझाया कि सारा जब इतनी बड़ी हो गई है कि उसकी मदद कर सके और जैक्स को अब देख-रेख की दरकार नहीं है। संक्षेप में, ईश्वर ने मुझसे सही शब्द कहलवाये, जिससे एमिली ने मेरी बात को स्वीकार कर लिया। मुझे विश्वास है कि यदि उसे उसकी इच्छा पर छोड़ दिया जाता, तब भी वह ऐसा ही करती।

मैंने सोचा कि बाजी करीब-करीब मार ली और एमिली बड़ी कोमल भावनाओं के साथ गरट्रूड की ओर उन्मुख हुई। किन्तु जब उसने उस बालिका को अधिक निकट से देखने के लिए बत्ती उठाई और देखा कि वह लड़की बेहद गन्दी है, तो उसकी उत्तेजना एकाएक बढ़ गई और वह चीखी—"ओफ्फो,

यह कितनी गन्दी है ! जाओ, फौरन अपनी सफाई करो। नहीं, यहां नहीं, बाहर जाओ और वहां अपने कपड़े झाड़ो। हाय-हाय, बच्चों पर ये जूएं चढ़ जायंगी। मुझे तो इनसे बड़ी नफरत है !"

इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता कि उस बेचारी बालिका पर जूएं बेहिसाब रेंग रही थीं। जब मुझे ध्यान आया कि हमारे लम्बे सफर में वह मुझसे कितनी सटकर बैठी थी तो मेरे अंदर भी वितृष्णा उत्पन्न हुए बिना न रही।

अच्छी तरह से सफाई करके कुछ मिनट बाद आया तो मैंने देखा कि मेरी पत्नी आरामकुर्सी पर पड़ी हुई है, उसका सिर उसके हाथों में है और वह सुबक रही है।

"तुम्हारे साहस की इतनी परीक्षा लेने का मेरा इरादा न था," मैंने बड़े कोमल स्वर में कहा, "जोहो, अब रात इतनी अधिक और अंधेरा इतना गहरा हो गया है कि कुछ किया भी नहीं जा सकता। मैं जागता रहूंगा, आग जलाता रहूंगा और यह लड़की आग के पास ही सोती रहेगी। कल हम इसके बाल काट देंगे और इसकी अच्छी तरह से सफाई कर देंगे।" मैंने उससे अनुरोध किया कि वह बच्चों से कुछ भी न कहे।

खाने का समय हुआ। मेज पर रखी चीजों पर हमारी रोजली बार-बार निगाह डालती रही और जब मैंने उसे एक रकाबी भरकर शोरबा दिया, तब वह बड़े ललचाये ढंगसे उसे चट कर गई। खाने के समय मैं चाहता था कि बच्चों से बातें करूं और उन्हें समझाऊं कि जिसे इस दुनिया में कुछ नहीं मिलता, उसकी हालत कितनी अजीब हो जाती है। भगवान ने हमारे यहां

जो मेहमान भेजा था, उसके लिए मैं उनमें करुणा और सहानुभूति पैदा करना चाहता था, लेकिन मुझे डर था कि कहीं एमिली फिर न भड़क उठे।

यह देखकर मैं बहुत ही गद्‌गद् हो गया कि सब लोगों के सोने चले जाने और एमिली के मेरे पास से उठ जाने के कोई घण्टेभर बाद हमारी छोटी-सी शारलट चुपचाप अधखुले दरवाजे से अपनी रात की पोशाक में नंगे पैर मेरे पास आई और अपनी बाहें मेरे गले में डालकर बड़े जोर से मुझे झकझोरने लगी।

"पापा, मैंने तुम्हें रात को अच्छी तरह से प्रणाम भी नहीं किया था।" वह बुदबुदाई।

फिर अपनी छोटी अंगुली से उस अंधी बालिका की ओर, जो आराम से ऊंघ रही थी और जिसे सोने जाने के पहले वह देखने को उत्सुक थी, इशारा करती हुई फुसफुसाई—"मैंने उसको भी तो प्यार नहीं किया।"

"तुम उसे कल प्यार कर लेना। अभी उसे नहीं छेड़ना चाहिए। वह सो रही है।" शारलट के साथ दरवाजे तक जाते हुए मैंने कहा।

तत्पश्चात मैं फिर बैठ गया और सवेरा होने तक अध्ययन तथा अगले प्रवचन की तैयारी में लगा रहा।

३/

२७ फरवरी

कल रात फिर जोर की बर्फ गिरी। आज सुबह से सामने-वाला दरवाजा बंद हो गया है और बाहर जाने के लिए बस एक ही रास्ता है, कपड़े धोनेवाले कमरे से। कल मैंने इस बात का पता लगा लिया था कि गांव में खाने-पीने की काफी सामग्री है। कारण, कुछ दिनों के लिए बाकी दुनिया से हमारा कोई संबंध नहीं रह जायगा। यह पहली सर्दी नहीं है, जब हम बर्फ से घिर गये हैं, फिर भी मुझे याद नहीं पड़ता कि इतना अधिक हिम-पात मैंने पहले कभी देखा हो! मैं इस अवसर का फायदा उठाते हुए वह कहानी जारी रखूंगा, जो मैंने कल शुरू की थी।

मैं बता चुका हूं कि पहले जब उस दुखी बालिका को घर लाया, तब मैंने ठीक से सोचा भी नहीं था कि हमारे घर में इसका क्या स्थान होगा। मैं अपनी पत्नी की सहन-शक्ति की सीमाओं को जानता था और घर में जगह की कमी और आमदनी की तंगी से भी परिचित था। ऐसे मौके पर हमेशा की तरह मैंने वही किया, जो मेरे लिए स्वाभाविक था। मैंने सिद्धांत का ध्यान रखा और क्षणभर के लिए भी इस बात की चिंता नहीं की कि अपनी भावना की मुझे कितनी कीमत चुकानी पड़ेगी। इस प्रकार

चिंता करके चलना मुझे हमेशा बाइबिल की शिक्षा के विरुद्ध मालूम होता है। लेकिन अपनी चिंताओं को ईश्वर को सौंप देना एक बात है और दूसरे लोगों के सिर पर डाल देना बिलकुल दूसरी बात। मुझे शीघ्र ही लगा कि मैंने एमिली के कंधों पर भारी बोझा लाद दिया है।

उस नन्हीं बालिका के बाल काटने में जितनी सहायता मैं पत्नी को दे सकता था, मैंने दी और देखा कि यह काम भी उसने नाक-भौं सिकोड़कर किया। फिर भी जब उसे नहलाने और साफ करने का मौका आया, तब मुझे यह काम अपनी पत्नी पर ही छोड़ना पड़ा।

शेष कामों के लिए एमिली ने ज़रा भी आपत्ति नहीं उठाई। ऐसा लगता था, जैसे रात में उसने सारी बातों पर विचार किया हो और अपने नये कर्तव्यों को अंगीकार कर लिया हो, यहां तक कि वह उनको करने में आनंद लेती दिखाई देने लगी। जब वह गरट्रूड का नहलाना, धुलाना और कपड़े पहनाना खत्म कर चुकी तो मैंने देखा कि वह मुस्करा रही है। लड़की के बाल काटने और मेरे उसके सिर पर तेल लगा देने के बाद उसे एक सफेद टोपी ओढ़ा दी गई। सारा के कुछ पुराने और साफ कपड़े उसे पहना दिये गए और उसके चिथड़ों को एमिली ने आग में फेंक दिया। गरट्रूड के असली नाम को हम लोग नहीं जानते थे, वह अनाथ लड़की स्वयं भी नहीं जानती थी। मेरी समझ में नहीं आया कि उसके नाम का कैसे पता लगाया जाय। सो शारलट ने उसका नाम गरट्रूड रख दिया और हम सब भी उसे इसी नाम से पुकारने लगे। वह सारा से थोड़ी ही छोटी होगी, क्योंकि

उसके पिछले साल के कपड़े उसके बदन पर ठीक बैठे थे।

मैं स्वीकार करता हूं कि शुरू-शुरू में मुझे गहरी और व्यग्र कर देनेवाली निराशा हुई। गरट्रूड की शिक्षा के विषय में मैंने एक धारणा बना रखी थी, किंतु वह एक क्रूर उपहास सिद्ध हुई। उसकी उदासीनता और उसके चेहरे की भाव-शून्यता ने मेरी उमंगों पर पानी फेर दिया। मुझे ऐसा लगा, जैसे वह अपने बचाव के लिए दिनभर अंगीठी के पास बैठी रहती है। मैंने देखा कि जैसे ही वह हमारी आवाजें सुनती और, विशेष रूप से, जैसे ही हम उसके पास जाते, उसकी मुख-मुद्रा कठोर हो उठती। भाव-शून्यता के स्थान पर उसके चेहरे पर विरोध की भावना दिखाई देने लगती। यदि कोई उसका ध्यान आकर्षित करने का प्रयत्न करता तो वह एक जानवर की तरह आवाजें करने लगती। यह उदासीनता खाने के समय ही दूर होती। मैं उसकी मदद करता और वह अपने खाने पर जंगलियों-जैसी लपलपाहट से ऐसी टूट पड़ती कि देखकर बहुत ही दुःख होता। प्रेम से जैसे प्रेम उपजता है, उसी तरह उस लड़की की हठधर्मी से मेरे अन्दर वितृष्णा की भावना पैदा हुई। पहले दस दिन बीतते-बीतते मैं पछताने लगा और उस बालिका में मेरी दिलचस्पी इतनी मंद पड़ गई कि अपने उस पहले आवेग पर, जिसके वशीभूत होकर मैं उसे ले आया था, मुझे परिताप होने लगा और मैं सोचने लगा कि मुझे उसे अपने साथ घर नहीं लाना चाहिए था। सबसे बड़ी मूर्खता तो यह थी कि मेरी उन भावनाओं पर, जिन्हें मैंने वास्तव में अपनी स्त्री से छिपा नहीं रखा था, स्वाभाविक रूप से एमिली अपने को विजयी अनुभव करने लगी और बड़ी उदारता एवं दयालुता से उस लड़की की देखरेख करती दिखाई देने लगी। उसने यह भी देख लिया कि गरट्रूड मेरे लिए बोझ बनती जा रही है और घर के सब लोगों के बीच उसकी उपस्थिति मुझे दुखद मालूम हो रही है।

जिस समय ऐसी हालत चल रही थी, मेरे एक मित्र दौरा करते हुए मेरे यहां आये। मैंने उन्हें गरट्रूड के बारे में सब बातें बताईं। सुनकर उनमें उस लड़की के प्रति बड़ी दिलचस्पी पैदा हुई और इस बात से उन्हें विशेष अचरज हुआ कि वह इतनी पिछड़ी हुई है। उनका ख्याल था कि उसकी एकमात्र व्याधि उसकी नेत्रहीनता है, लेकिन मैंने उन्हें बताया कि उसे उस बूढ़ी स्त्री के बहरेपन के कारण भी बड़ी मुसीबत का सामना करना पड़ा है, जो उसकी एकमात्र संरक्षिका थी और जो उससे कभी नहीं बोली थी। इस जानकारी के मिलते ही डाक्टर ने कहा कि मुझे पछतावा नहीं करना चाहिए और सही उपाय करना चाहिए, जो मैं नहीं कर रहा हूं। वह बोले :

"तुम बिना नींव का भरोसा किए मकान बनाने की कोशिश कर रहे हो। तुम्हें यह सोचना चाहिए कि उसका सारा दिमाग जड़ता की हालत में है और अभीतक उसकी प्रारम्भिक इन्द्रियों का भी निर्माण नहीं हो पाया है। सबसे पहला काम वह करो, जिससे उसमें स्पर्श और स्वाद की चेतना उत्पन्न हो। इसके बाद उसमें स्वर जोड़ो। यह काम बिना थके बार-बार करना चाहिए और स्वयं बोलने के बाद उससे बुलवाने की कोशिश करनी चाहिए। लेकिन इसमें बहुत जल्दी करने से काम नहीं बनेगा। समय बांध लो और एक बार में कभी भी लड़की पर बहुत देर

तक दबाव न डालो।"

"इस उपाय में," मुझे बारीकी से समझाते हुए उन्होंने आगे कहा, "कोई खास जादू नहीं है और न मैंने इसे ईजाद किया है। दूसरे लोगों ने भी इसपर अमल किया है। तुम्हें याद नहीं है कि स्कूल में दर्शन की कक्षा में हमारे प्रोफेसरों ने भी हमें एक ऐसी ही घटना सुनाई थी?"

इतना कहकर उन्होंने थोड़ा रुककर जैसे अपने को सुधारा और कहा, "नहीं, यह बात मैंने मनोविज्ञान की एक समीक्षा में... खैर, कोई बात नहीं...इसका मुझपर बड़ा असर हुआ। मुझे उस बेचारी लड़की का नाम भी याद है, जो गरट्रूड से कहीं ज्यादा मुसीबत की मारी थी, कारण कि वह बहरी-गूंगी ही नहीं, अन्धी भी थी। पिछली सर्दी में एक डाक्टर ने इंग्लैण्ड में उसे पाया था और उस डाक्टर ने उसको शिक्षा देने में अपने को खपा दिया था। लड़की का नाम था लौरा ब्रिजमैन। डाक्टर ने उस लड़की की प्रगति का ब्योरा रखा, जैसाकि तुमको भी करना चाहिए। शुरू-शुरू में कई दिनों और हफ्तों तक उन्होंने उसे बारी-बारी से दो चीज़ों का भान कराया—पिन और कलम, और फिर नेत्रहीनों के लिए ब्रेल-पद्धति की पुस्तक में लिखे हुए पिन और कलम शब्दों पर उसकी अंगुलियां रखवाईं। हफ्तों तक कोई नतीजा नहीं निकला। ऐसा लगता था, जैसे उसका शरीर जड़ हो। फिर भी डाक्टर ने धीरज न छोड़ा। 'मुझे ऐसा लगा' डाक्टर ने लिखा है, 'जैसे कोई आदमी एक अंधे गहरे कुंए के किनारे पर झुका हुआ खड़ा हो और अपनी पूरी कोशिश से एक रस्सी को इस आशा से घुमा रहा हो कि कोई उसे पकड़ ले।' उस डाक्टर को एक क्षण के लिए भी इस बात पर सन्देह नहीं हुआ था कि कुंए की तली में कोई है और अन्त में वह रस्सी को जरूर पकड़ेगा। आखिर एक दिन उसने देखा कि लौरा का भावहीन चेहरा मधुर मुस्कान से चमक उठा। प्रेम और आभार के आंसू डाक्टर की आंखों में छलछला आये और उसने झुककर ईश्वर का अनुग्रह माना। आखिर लौरा यह समझ गई कि डाक्टर क्या चाहता है। उसका निस्तार हो गया। उस दिन के बाद वह पूरा ध्यान देने लगी। उसकी प्रगति में तेजी आ गई। जल्दी ही वह स्वयं शिक्षा ग्रहण करने लगी और आखिरकार नेत्रहीनों की संस्था की वह अध्यक्ष बन गई। हाल ही में और भी ऐसे दृष्टांत सामने आये हैं, जिनकी अखबारों में काफी चर्चा है। लोग अचरज करते हैं कि क्या ऐसे प्राणी कभी सुखी हो सकते हैं! उनका अचरज करना मेरी राय में मूर्खता है, क्योंकि चहारदीवारी के अन्दर घिरे ये लोग सचमुच खुश थे। बेशक, पत्रकारों को बेहद प्रसन्नता हुई और वे उन लोगों को उपदेश देने लगे, जो पंचेन्द्रियों का पूरा लाभ होते हुए भी शिकायत करते हैं कि..."

यहां डाक्टर और मेरे बीच विवाद उठ खड़ा हुआ। मैंने उनके इस निष्कर्ष का विरोध किया कि हमारी इन्द्रियां आगे चलकर हमें दुखी बनाती हैं।

"...भाईसाहब, मेरा यह आशय नहीं है," उन्होंने प्रतिवाद करते हुए कहा, "मैं तो केवल यही कहना चाहता हूं कि अव्यवस्था और पाप की तुलना में, जो हर जगह मलिनता फैलाते हैं, और इस संसार को कलुषित करते हैं, मनुष्य की इन्द्रियां सौन्दर्य, सुख और समरसता का अधिक आसानी और प्रसन्नता

से बोध कर लेती हैं। ऐसी अवस्था का पता अपनी इन्द्रियों से ही चलता है, जो कि उन कामों के करने में हमारी मदद करती हैं। मनुष्य को यदि पाप की कोई जानकारी न हो तो वह कितना सुखी हो।..."

इसके बाद उन्होंने मुझे डिकिन्स की एक कहानी सुनाई, जो उनकी राय में, सीधी लौरा ब्रिजमैन के दृष्टांत से प्रेरित थी। उन्होंने वादा किया कि वह उस कहानी को मेरे पास भेज देंगे। चार दिन बाद मुझे वह कहानी मिल गई। मैंने उसे बड़े आनन्द से पढ़ा। वह एक नन्हीं अंधी लड़की की बड़ी लम्बी, बल्कि कहीं-कहीं अत्यन्त हृदयस्पर्शी, कहानी थी। इस लड़की का संरक्षण उसका बाप करता था, जो खिलौने बनानेवाला एक गरीब आदमी था—आराम, धन और प्रसन्नता की इस मायावी दुनिया में। डिकिन्स ने अपनी पूरी कला यह बताने में खर्च की कि यह एक पुनीत कार्य है। लेकिन मैंने मन-ही-मन निश्चय किया कि भगवान की कृपा से मैं ऐसा मिथ्याचरण गरट्रूड के साथ नहीं करूंगा।

डाक्टर के जाने के बाद मैंने पूरी तन्मयता और क्षमता से इस उपाय को कार्यान्वित करना शुरू किया। मुझे इस बात का खेद है कि उनकी सलाह के अनुसार मैंने उस प्रकाशमान मार्ग पर, जिसपर मैं स्वयं शुरू में भटकता हुआ चल रहा था, गरट्रूड के प्रारम्भिक कदम रखने का ब्योरा नहीं रखा। पहले हफ्तों में कल्पना से अधिक धैर्य की आवश्यकता हुई, इसलिए नहीं कि इस प्रकार की शिक्षा में समय अधिक लगता है, बल्कि इसलिए कि मुझे बड़ी निन्दा का सामना करना पड़ा। मुझे यह

कहते बड़ा दुःख होता है कि यह निन्दा मेरी पत्नी एमिली की ओर से हुई। इसका उल्लेख मैं यहां इसलिए कर रहा हूं कि अब मेरे अन्दर घृणा अथवा कटुता का कोई भी निशान बाकी नहीं रहा है। मैं बहुत ही संजीदगी से इस बात को कह रहा हूं, क्योंकि हो सकता है कि ये पंक्तियां आगे चलकर एमिली की आंखों के सामने आवें। जिस समय उसकी निन्दा से मुझे भारी मुसीबत का सामना करना पड़ रहा था, मुझे इस बात पर क्रोध नहीं आया कि गरट्रूड को मेरा इतना अधिक समय देना उसे अच्छा नहीं लगता था। जिस बात पर मुझे विशेष खेद हुआ, वह यह थी कि उसे यह विश्वास ही नहीं होता था कि मेरे प्रयत्न कभी सफल होंगे। उसमें आस्था के अभाव से मुझे बड़ी चोट लगी, लेकिन मैं हतोत्साहित नहीं हुआ।

जब-जब मैं गरट्रूड के साथ व्यस्त होता, वह मुझसे कहलवाती कि इस समय तो मुझे अमुक व्यक्ति से मिलना है या अमुक काम करने को पड़ा है। सच तो यह है कि उसे एक प्रकार की ईर्ष्या अनुभव होती थी, क्योंकि उसने दो-चार बार मुझसे कहा भी—"तुमने कभी इतनी मेहनत अपने बच्चों पर तो नहीं की।" इसमें सचाई थी। हालांकि मैं अपने बच्चों को बहुत चाहता था, लेकिन मैंने कभी नहीं सोचा था कि उनको इतना समय मुझे देना चाहिए।

मेरा अक्सर यह तजुर्बा रहा है कि बाइबिल में 'खोई भेड़' की जो धर्म-कथा आती है, उसे उन लोगों के लिए भी स्वीकार करना बहुत कठिन है, जो दिल से अपने को आस्थावान ईसाई मानते हैं। यह कहना कि गड़रिये की निगाह में झुण्ड की हर

भेड़ बाकी के सारे झुण्ड से ज्यादा कीमती है, ऐसे लोगों की विचार-शक्ति से परे है। "यदि किसी आदमी के पास सौ भेड़ें हैं और उनमें से एक कहीं खो गई है तो क्या वह निन्यानवे भेड़ों को छोड़कर उस खोई हुई भेड़ को ढूंढ़ने पहाड़ों में नहीं चला जाता!"—इन शब्दों में दयालुता है, किन्तु यदि साधारण लोग खुले हृदय से बोलने की हिम्मत करें तो कहेंगे कि ऐसा करना नितान्त अनुचित समझते हैं।

४/

गरट्रूड जब पहले-पहल मुस्कराई, तब मुझे बड़ी राहत मिली। लगा, मेरी मेहनत कई गुनी वसूल हो गई। "मैं कहता हूं कि जो 'खोई हुई भेड़' को पाता है, उसे उस भेड़ से बड़ी खुशी होती है—उन निन्यानवे भेड़ों की अपेक्षा, जो खोई ही नहीं।" सचमुच गरट्रूड के जर्द चेहरे पर जब एक दिन सुबह मुझे मुस्कराहट दिखाई दी और महसूस हुआ कि अकस्मात उसपर उस समझदारी और दिलचस्पी का असर पड़ा है, जिससे मैं उसे इतने दिनों से पढ़ाने की कोशिश कर रहा था, तो मेरा हृदय एक दिव्य उल्लास से भर उठा। ऐसा उल्लास मुझे अपने बच्चों से कभी नहीं मिला था।

५ मार्च

मैंने इस दिन को ऐसे स्मरण रखा, मानो वह कोई जन्म-दिन हो। गरट्रूड की मुस्कान केवल मुस्कान नहीं थी, उसका अर्थ था उसमें मौलिक परिवर्तन। उसकी आकृति में जीवन चमकने लगा। वह एक आकस्मिक प्रकाश था, ठीक उस समय का-सा प्रकाश, जब ऊंचे आल्प्स पर्वतों में उषा के आगमन के पूर्व लालिमा फूट उठती है। उससे प्रकाशित हिम-मंडित शिखर सिहर उठते हैं और उनपर से अन्धकार का आवरण हट जाता

है। अकस्मात बैथेस्डा सरोवर का उस समय का दृश्य मेरे ध्यान में सजीव हो उठा, जब देवदूत उसके सुप्त जल को जाग्रत करने के लिए आकाश से उतरते हैं। गरट्रूड के चेहरे पर अकस्मात जो दिव्य भाव उदय हुआ, उसे देखकर मुझे बड़ा ही आनन्द मिला, क्योंकि मेरे लिए यह बात बिलकुल स्पष्ट थी कि इस दैवी अतिथि में बुद्धि की कुशाग्रता उतनी अधिक नहीं है, जितनी प्यार की। कृतज्ञता के वशीभूत होकर मैंने उसके माथे को चूम लिया और ऐसा करते समय मुझे अनुभव हुआ, मानो मैं ईश्वर का आभार मान रहा हूं।

इसके बाद गरट्रूड ने जो प्रगति की, वह उतनी ही तेज थी, जितनी कि शुरू के प्रयत्नों में धीमी रही थी। मुझे कभी-कभी लगता कि गरट्रूड सारे नियम-कायदों को लांघकर बड़ी तेजी से आगे बढ़ रही है। मुझे याद पड़ता है कि पहले मैंने वस्तुओं की किस्मों की अपेक्षा उनके गुणों पर अधिक ध्यान दिया—गरम, ठंडा, मीठा, कड़ुआ, सख्त, नरम, हल्का। फिर गति पर, जैसे, उठना, रखना, हटाना, उनके पास जाना, बांधना, इकट्ठे करना, अलग करना इत्यादि। शीघ्र ही मैंने सिद्धान्त बताने के सारे प्रयत्न छोड़ दिये और उससे बातचीत करना शुरू कर दिया, बिना इस बात की चिन्ता किये कि मेरी बातों को समझने में उसका दिमाग हमेशा सक्षम हो पाता था या नहीं। लेकिन मैं धीरे-धीरे आगे बढ़ा। उसकी रुझान देखकर मैं उसे सवाल करने के लिए आमंत्रण देता और उकसाता।

निश्चय ही जितनी देर मैं उसे अकेली छोड़ता, उसका दिमाग क्रियाशील रहता, क्योंकि जब-जब कुछ समय अनुपस्थित

रहकर मैं उसके पास जाता, तब-तब यह देखकर आश्चर्य करता कि अन्धकार की दीवार, जिसने हमें अबतक पृथक कर रखा था, घटती जा रही है। आखिरकार मैंने अपने आपसे कहा, "यह तो ऐसे ही हुआ जैसे कि वायु की गरमी और वसन्त का विस्तार धीरे-धीरे शीत पर विजयी हो जाय।" कितनी ही बार मुझे इस परिवर्तन पर अचंभा हुआ। उसके अंतर्चक्षु खुलने लगे, जबकि उसका बाह्य रूप अपरिवर्तित रहा।

इस डर से कि आग के पास बैठे-बैठे बूढ़ी स्त्री की तरह कहीं गरट्रूड दुर्बल न हो जाय, मैंने उसे बाहर ले जाना शुरू किया। लेकिन जबतक कि वह मेरी बांह न पकड़ लेती, बाहर पैर न रखती। जब वह पहली बार घर से बाहर निकली, तब मैं उसके शब्दों द्वारा बताने से पहले उसके आश्चर्य और भय को देखकर समझ गया कि उसने अभी तक कभी घर की दहलीज लांघने का साहस नहीं किया। जिस मकान में मैंने उसे पाया था, उसमें किसीने उसका ख्याल नहीं किया था, सिवा खाना देने और मरने से बचाने के। मैं नहीं कह सकता कि किसीने उसको जीवित रहने में मदद दी। अन्धकार से भरा उसका छोटा-सा संसार एक कमरे की चहारदीवारी से घिरा हुआ था, जिसे उसने कभी नहीं छोड़ा था। गरमी के दिनों में उसने मुश्किल से दहलीज तक कदम रखा था, जब कि प्रकाश के विशाल संसार के लिए द्वार खुले पड़े थे। बाद में उसने मुझे बताया कि जब वह पक्षियों के गीत सुनती थी, तब सोचा करती थी कि यह सिर्फ रोशनी का असर है। वह सोचती कि जिस तरह पानी आग पर उबलना शुरू कर देता है, ठीक उसी तरह गरम हवा को भी, जिसे वह

अपने गालों और हाथों पर महसूस किया करती थी, गाना शुरू करना चाहिए। सचाई यह है कि वह सोचने का जोर अपने ऊपर नहीं डालती थी, उसकी किसी भी चीज में रुचि नहीं थी और मेरे उसे संरक्षण में लेने के दिन तक वह नितान्त जड़ अवस्था में रही। मुझे उसका वह अनन्त उल्लास याद आता है, जब मैंने उसे बताया कि छोटी-छोटी आवाजें जीवित प्राणियों में से आती हैं, जिनका मुख्य काम उस आनन्द को व्यक्त करना है, जो सम्पूर्ण प्रकृति में व्याप्त है। उस दिन से उसने कहना शुरू किया, "मैं उतनी ही प्रसन्न हूं, जितनी कि चिड़ियां।" लेकिन इस विचार से कि इन चिड़ियों का चहचहाना एक ऐसे दृश्य के वैभव को व्यक्त करता है, जिसे वह देख नहीं सकती, वह उदास हो उठती।

"क्या यह दुनिया सचमुच उतनी सुन्दर है, जितनी कि चिड़ियां बताती हैं ?" वह पूछती, "लोग हमें अक्सर ऐसी बातें क्यों नहीं बताते ? आप भी मुझे कभी क्यों नहीं बताते ? क्या मेरे दुखी होने के डर से कि मैं इसे देख नहीं सकती ? लेकिन ऐसा करना ठीक नहीं। मैं इतने ध्यान से चिड़ियों की बातें सुनती हूं और सोचती हूं कि उनकी हरेक बात, जो वे कहती हैं, मैं समझ लेती हूं।"

'जो लोग देख सकते हैं, वे चिड़ियों को उतनी अच्छी तरह से नहीं सुनते, जितनी अच्छी तरह से तुम सुनती हो, गरट्रूड।" तसल्ली देने की आशा से मैं कहता।

"दूसरे जीव क्यों नहीं गाते ?" वह पूछती। कभी-कभी उसके प्रश्न मुझे आश्चर्यचकित कर देते और एक क्षण के लिए हतप्रभ-से कर देते। वजह यह थी कि वह ऐसी चीजों पर प्रकाश डालने के लिए जोर देती, जिनपर उस समय तक शायद ही कभी मेरा ध्यान गया हो। इसीलिए मुझे पहली बार आभास हुआ कि जो जीव जितना ज्यादा धरती के निकट रहता है और जितना ज्यादा वह भारी-भरकम होता है, उतना ही वह काहिल होता है। मैंने उसे यह समझाने की कोशिश की। मैंने उसे गिलहरी और उसकी कूद-फांद के बारे में भी बताया।

उसने मुझसे पूछा, "क्या चिड़ियां ही उड़ा करती हैं ?"

"नहीं, तितलियां भी उड़ा करती हैं।"

"क्या वे गाती हैं ?"

"उनकी खुशी को प्रकट करने का दूसरा ढंग है। वह खुशी उनके पंखों पर चित्रित रहती है।" और मैंने उसे तितली के इन्द्रधनुषी रंगों की जानकारी दी।

५/

२८ फरवरी

अब ज़रा पीछे मुड़कर देखें, क्योंकि कल मैं भावना के प्रवाह में बह गया था।

गरट्रूड को पढ़ाने के लिए मुझे स्वयं ब्रेल-वर्णमाला सीखनी पड़ी, लेकिन वह तो मुझसे भी ज्यादा तेजी के साथ पढ़ने लगी।

गरट्रूड को पढ़ाने का काम अकेला मैं ही नहीं करता था, दूसरे लोग भी मेरी सहायता करते थे। इससे मुझे खुशी होती क्योंकि अपने इलाके में मुझे काफी काम करना पड़ता था। घर इतनी दूर-दूर फैले हुए थे कि कभी-कभी गरीबों और बीमारों को देखने के लिए मुझे दूर-दूर तक जाना पड़ता था। बड़े दिन की छुट्टियों में जैक्स घर आया हुआ था। पढ़ाई के दिनों में उसे लोज़ान जाना होता था, जहां उसकी प्रारम्भिक शिक्षा हुई थी और जहां अब वह धर्म-शास्त्र पढ़ रहा था। इन छुट्टियों में स्केटिंग करते हुए उसकी बांह टूट गई। चोट बहुत नहीं थी। मैंने फौरन मार्टिन्स को बुलाया। उसने बिना किसी सर्जन की मदद लिये जैक्स की बांह की हड्डी बैठा दी। जैक्स अब अकस्मात गरट्रूड में दिलचस्पी लेने लगा। अबतक वह उसकी ओर कोई विशेष ध्यान नहीं देता था, लेकिन अब वह उसे पढ़ाने में मेरी मदद करने लगा। उसकी मदद केवल तीन सप्ताह तक रही, लेकिन इन तीन

हफ्तों में गरट्रूड ने बहुत प्रगति की। उसके अन्दर असामान्य उत्साह पैदा हो गया। उसकी बुद्धि, जो कलतक कुण्ठित पड़ी थी और एक कदम भी बढ़ना कठिन था, अब सरपट दौड़ लगाने के लिए तत्पर हो गई। मुझे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि अब वह बड़ी आसानी से अपने विचारों को शक्ल दे सकती थी। वह अपने को अभिव्यक्त करना सीख गई थी—बचकाने ढंग से नहीं, बल्कि सही-सही और गम्भीरता के साथ। वह शब्द-चित्रों द्वारा अपने विचारों को प्रकट करती थी और ये चित्र बड़े ही आनन्ददायक होते थे। अपने चित्रण में वह उन चीजों का हमेशा प्रयोग करती थी, जिनको वह छू या अनुभव कर सकती थी और उन्हीं चीजों के द्वारा वह उन बातों की व्याख्या करती थी, जो उसकी पहुंच के बाहर होती थीं।

उसकी शिक्षा के लिए शुरू में जो कदम उठाये गए, उनकी चर्चा करना अनावश्यक है। मेरा ख्याल है कि सब नेत्रहीनों की प्रारम्भिक शिक्षा इसी प्रकार होती है। (इस प्रसंग में मुझे यह भी सोचने का अवसर मिला कि बाइबिल में कहीं भी रंगों का उल्लेख नहीं है।) मुझे नहीं मालूम कि दूसरे लोग मेरी स्थिति में क्या करते, लेकिन मैंने तो उसे ठीक उसी क्रम में रंगों के नाम बताने शुरू किये, जिस क्रम में वे इन्द्र-धनुष में आते हैं। लेकिन उसी समय उसके दिमाग में रंग और चमक के बीच उलझन पैदा हो गई। मैंने अनुभव किया कि उसकी कल्पना रंगों में भेद नहीं कर पाती थी। उसे यह समझने में सबसे अधिक कठिनाई हुई कि हर रंग थोड़ा-बहुत काला हो सकता है और रंगों को एक-दूसरे के साथ किसी भी हद तक मिलाया जा सकता है। इस विषय को

लेकर उसे बहुत ही परेशानी हुई और वह बार-बार उसीके बारे में पूछताछ करती रही।

इसी बीच मुझे उसे वाद्य-गान सुनाने के लिए न्यू चैटल साथ ले जाने का मौका मिला। सह-गान में अलग-अलग वाद्यों ने जो भाग लिया, उससे मेरा ध्यान रंगों की समस्या की ओर चला गया और मैंने गरट्रूड से कहा कि वह तारों और काष्ठ-यन्त्रों के विभिन्न स्वरों को बहुत ध्यान से सुने। मैंने उसे यह भी बताया कि उनमें से हरेक वाद्य अपने ढंग पर सारे स्वरों को प्रस्तुत करने की क्षमता रखता है—और आरोह से लेकर अवरोह तक, विभिन्न लयों के साथ। मैंने उससे कहा कि इसी तरह से प्रकृति के सारे रंगों की कल्पना करो। यह सुनकर उसके मन के सारे सन्देह दूर हो गये और उसके अन्दर बड़ी खुशी पैदा हुई।

"ये कितने सुन्दर होंगे!" उसने कहा।

फिर अनायास बोली, "लेकिन मेरी समझ में नहीं आता कि सफेद रंग कैसा होता है?"

मैंने उसे समझाने की कोशिश की कि सफेद वह सीमा है, जहां सारे रंग मिलाकर एक किये जा सकते हैं। लेकिन अपने इस समझाने से न तो मुझे सन्तोष हुआ और न उसे। उसने तत्काल कहा कि काष्ठ और पीतल के वाद्यों और वायलिन, इन सबके अलग-अलग स्वर भी तो रहते हैं। उसकी इस बात पर मेरा मन उलझन में पड़ गया और मैं चुप रहकर कोई ऐसी तुलना ढूंढ़ने लगा, जो उसपर असर डाल सके।

आखिर मैंने कहा, "कल्पना करो कि सफेद कोई बिलकुल बेरंग चीज है, ऐसी चीज, जिसमें रंग का कोई अस्तित्व नहीं है,

केवल चमक है। इसके विपरीत, काले में इतना रंग होता है कि वह काला हो जाता है।"

ये टूटे-फूटे संवाद उन कठिनाइयों की एक मिसाल-भर हैं, जिनका सामना मुझे अक्सर करना पड़ता था। गरट्रूड में एक बड़ा गुण था। वह कभी भी किसी चीज को समझने का ढोंग नहीं करती थी, जैसा कि बहुत-से लोग किया करते हैं और इस तरह अपने दिमाग को गलत अथवा झूठे तथ्यों से भर लेते हैं, जो अंततोगत्वा उनकी तर्क-बुद्धि को विकृत कर देते हैं। जबतक वह किसी बात का स्पष्ट चित्र नहीं बना लेती थी, तबतक वह बात उसके लिए चिन्ता और बेचैनी का कारण बनी रहती थी।

इस सम्बन्ध में कठिनाई इस बात से और भी बढ़ गई कि रोशनी और गरमी की कल्पना में ये दोनों चीजें एक-दूसरे से इतनी जुड़ गईं कि बाद में उन्हें अलग करने में मुझे बड़ी कठिनाई हुई। इस प्रकार उसके साथ इन प्रयोगों में मुझे बराबर इस बात की अनुभूति होती रही कि दृश्य-जगत स्वर-जगत से कितना भिन्न है और इन दोनों के बीच तुलना करना कितना व्यर्थ है।

६/

२६ फरवरी

अपनी इन तुलनाओं में मैं कुछ ऐसा लीन रहा हूं कि अब-तक यह नहीं बता पाया कि न्यू चैटल के वाद्य-गान के समय गरट्रूड खामोश रही, मानो उल्लास के सागर में डूबी हो।

"आप जो कुछ कहते हैं, वह क्या सचमुच इतना ही सुन्दर है ?" आखिरकार उसने पूछा।

" 'इतना ही सुन्दर' से तुम्हारा क्या मतलब है, गरट्रूड?"

"जितना कि 'नदी के किनारे का दृश्य' ?"

मैंने अभी तक गरट्रूड से बुराई, पाप और मृत्यु के बारे में बात करने का साहस नहीं किया था। मैंने कहा, "जिनके आंखें हैं, वे इनका आनन्द नहीं जानते।"

"लेकिन मैं, जिसके आंखें नहीं हैं, सुनने का आनन्द लेता हूं।" वह तेज स्वर में बोली।

चलते-चलते वह मुझसे सट गई और मेरी बांह पर ऐसे लटक गई, जैसे कि छोटे बच्चे लटक जाते हैं।

फिर बोली, "क्या आप अनुभव कर सकते हैं कि मैं कितनी प्रसन्न हूं ? मैं सिर्फ आपको खुश करने के लिए यह नहीं कहती हूं। मेरी ओर देखिये। क्या आप दूसरे लोगों के चेहरों को देख-

कर यह नहीं समझ सकते कि वे सच बोल रहे हैं या झूठ ? मैं हमेशा इस बात को उनकी आवाज से जान लेती हूं। क्या आपको वह दिन याद है, जब आपने मुझे बताया था कि आप दुखी नहीं हो रहे हैं, जबकि आंटी ने (वह मेरी पत्नी को यही कहकर सम्बोधित करती थी) आपको मदद न देने पर धिक्कारा था ? और तब मैंने आपसे कहा था, "आप जो कह रहे हैं, वह सच नहीं है।" मैंने फौरन ही आपकी आवाज से भांप लिया था कि आप मुझसे सच नहीं बोल रहे हैं। मुझे आपके गालों को छूकर यह जानने की जरूरत नहीं थी कि आप दुखी हो रहे हैं या नहीं।" उसने ऊंचे स्वर में दोहराया—"नहीं, आपके गालों को छूने की कोई जरूरत नहीं थी।"

इससे मैं लज्जा से गड़ गया, क्योंकि हम अभीतक शहर में ही थे और लोग हमारी ओर मुड़कर देखने लगे थे। फिर भी वह कहती गई, "आपको मुझे धोखा देने की कोशिश नहीं करनी चाहिए। पहले तो इसलिए कि एक अंधे को धोखा देना बुरी बात है...और फिर इसलिए भी कि आप ऐसा करने में सफल नहीं होंगे।" वह हँस दी और फिर बोली, "मुझे बताइये, आप दुखी तो नहीं हैं ?"

मैंने उसका हाथ अपने होठों पर रख लिया, मानों बिना स्वीकार किये उसे यह महसूस कराना चाह रहा था कि मेरी प्रसन्नता उसीके साथ है। ऐसा करते हुए मैंने उसे जवाब दिया, "नहीं गरट्रूड, मैं अप्रसन्न नहीं हूं। मैं अप्रसन्न हो भी कैसे सकता हूं !"

"फिर भी कभी-कभी दुखी हो जाते हैं ?"

"हां जब-तब दुःख उभर आता है।"

"क्या उस समय के बाद आप कभी दुखी नहीं हुए ?"

"नहीं, फिर दुखी नहीं हुआ।"

"और...यह बताइये, क्या उसके बाद आपका झूठ बोलने को मन हुआ है ?"

"नहीं, प्यारी बच्ची !"

"क्या आप मुझे कभी धोखा न देने का वादा कर सकत हैं ?"

"मैं वादा करता हूं।"

"अच्छा, तब मुझे बताइए, क्या मैं सुन्दर हूं ?"

इस आकस्मिक प्रश्न पर मैं अवाक् रह गया।...इसलिए और भी कि मैं बड़ी मेहनत से उस समय तक गरट्रूड की अनुपम सुन्दरता की ओर ध्यान देने से बचता रहा था। वैसे भी मैंने यह बिलकुल अनावश्यक समझा कि उसको स्वयं इसकी जानकारी कराई जाय।

"यह जानकर तुम्हें क्या मिलेगा ?" मैंने पूछा।

"मैं उत्सुक हूं..." उसने कहा, "मैं यह जानने के लिए उत्सुक हूं कि क्या मैं...इसे किस तरह कहूं ? मैं और किससे जाकर पूछूं ?"

"यह पादरी का काम नहीं है कि वह लोगों के चेहरों के सौन्दर्य से अपना सम्बन्ध रखे।" मैंने यथासम्भव अच्छी तरह से अपना बचाव करते हुए कहा।

"क्यों नहीं ?"

"क्योंकि उनकी आत्मा का सौन्दर्य ही उसके लिए काफी

है।"

"मैं सोचती थी कि मैं बदसूरत हूं।" उसने बड़ी लुभावनी उदासीनता से कहा।

इसपर मैंने अपने अंतर्द्वन्द्व को समाप्त करते हुए कहा, "गरट्रूड, तुम अच्छी तरह जानती हो कि तुम सुन्दर हो।"

इसके बाद वह चुप रही और उसके चेहरे पर गहरी गम्भीरता का भाव झलक आया। यह भाव हम लोगों के घर पहुंचने तक बराबर बना रहा।

हमारे लौटते ही एमिली ने यह स्पष्ट कर दिया कि मेरा इस तरह समय नष्ट करना उसे पसन्द नहीं है। इस बात को वह पहले भी कह सकती थी, लेकिन लोगों को बिना कुछ कहे काम करने देने और बाद में उनपर दोष मढ़ने के अपने अधिकार को सुरक्षित रखने की आदत के अनुसार उसने गरट्रूड और मुझे बिना कुछ कहे चले जाने दिया था। उसने शब्दों द्वारा उतनी कहा-सुनी नहीं की, जितना कि अपने मौन से मुझे दोषी ठहराया। उसे मालूम था कि मैं गरट्रूड को कहां लेकर गया हूं, इसलिए यह बड़ा ही स्वाभाविक होता, यदि वह हमारे लौटने पर पूछती कि वाद्य-गान में हम लोगों ने क्या-क्या सुना। क्या इससे उस बालिका का आनन्द न बढ़ जाता ?

रात को जब बच्चे सोने चले गये और मैंने बड़ी गम्भीरता से उससे पूछा कि वाद्य-गान में गरट्रूड को ले जाने से वह क्यों खीज रही है, तब उसने जवाब दिया—"तुम इसके लिए वह काम करते हो, जो अपने किसी भी बच्चे के लिए हर्गिज नहीं करोगे।"

इस तरह, जैसाकि हम धर्म-कथा में पढ़ते हैं, उसे हमेशा एक ही शिकायत रहती है और वह यह समझने से इन्कार कर देती है कि दावत उसी खोये बच्चे को दी जाती है, जो लौटकर हमारे पास आ जाता है, न कि उनको, जो घर पर ही रहते हैं। मुझे यह सोचकर बड़ा बुरा लगा कि एमिली ने बेचारी गरट्रूड की शारीरिक लाचारी पर तनिक भी ध्यान नहीं दिया, यद्यपि वह जानती थी कि गरट्रूड और किसी प्रकार के आनन्द की कल्पना भी नहीं कर सकती थी। एमिली को यह भी भली भांति पता था कि मैं दैवयोग से ही अपराह्न में खाली था, अन्यथा मैं सदा ही बड़ा व्यस्त रहता हूं। वह यह भी अच्छी तरह जानती थी कि दूसरे बच्चे किसी-न-किसी काम में व्यस्त रहते हैं और वह स्वयं संगीत की शौकीन नहीं है। यदि उसके पास सारा समय खाली होता तो भी उसके मन में वाद्य-गान के कार्यक्रम में जाने की इच्छा न उठती, भले ही वह कार्यक्रम हमारे दरवाजे पर ही क्यों न होता।

मुझे जिस बात से और भी अधिक दुःख हुआ वह यह थी कि एमिली ने यह सब गरट्रूड के सामने कहा। हालांकि मैं उसे एक ओर ले गया था, फिर भी उसने अपनी आवाज इतनी ऊंची रखी कि गरट्रूड ने सबकुछ सुन लिया। मुझे दुःख तो हुआ ही, उससे अधिक गुस्सा भी आया। एमिली के जाने के कुछ ही क्षण बाद मैं गरट्रूड के पास गया और उसके दुबले-पतले हाथ को अपने हाथ में लेकर मैं अपने चेहरे पर ले गया। "देखती हो," मैंने कहा, "इस बार मैं दुखी नहीं हूं।"

"नहीं," मुस्कराने की कोशिश करते हुए उसने जवाब दिया, "इस बार दुखी होने की मेरी बारी है।" और ज्योंही उसने मेरी ओर मुंह उठाया, मैंने देखा कि उसके चेहरे पर आंसुओं की बाढ़ आ रही है।

८ मार्च

एमिली को एकमात्र सुख मैं यही दे सकता हूं कि जिन चीजों को वह नापसन्द करती है, उन्हें न करूं। प्रेम के निषेधात्मक संकेतों को ही वह मुझे अनुमति देती है। उसने मेरे जीवन को किस अंश तक संकुचित कर दिया है, यह वह अनुभव नहीं कर सकती। मैं उसके लिए बड़ी खुशी से खतरनाक-से-खतरनाक काम कर सकता हूं, लेकिन प्रत्येक असामान्य वस्तु में उसे अरुचि दिखाई देती है। इसलिए उसके लिए जीवन में प्रगति का अर्थ केवल यह है कि दिन-पर-दिन गुजारे जाओ। वह कोई भी नई चीज नहीं चाहती, न चीजों में विकास ही उसे पसन्द है। अपनी वृत्तियों को घरू बना लेने के सिवा और कुछ पाने के आत्मा के प्रत्येक प्रयास को वह यदि नापसन्दगी की नहीं तो अविश्वास की निगाह से अवश्य देखती है।

मैं स्वीकार करता हूं कि उस दिन अपराह्न में न्यू चैटल में मैं यह बिलकुल भूल गया कि मुझे बिसाती के बिल का भुगतान करने जाना है और एमिली के लिए कुछ रुई के बण्डल लाने हैं। लेकिन इससे जितनी परेशान वह हो सकती थी, उससे कहीं ज्यादा परेशान मैं था, विशेषकर इसलिए कि मैंने इस बात का पक्का इरादा कर रखा था कि मैं उसके कामों को कभी नहीं भूलूंगा। मैं इस बात को अच्छी तरह से जानता था—"जो आदमी छोटी-से-छोटी बात में सच्चा होता है वह बड़ी-से-बड़ी

बात में भी सच्चा रहता है।" मुझे इस बात का भी डर था कि वह मेरी विस्मृति से न जाने क्या-क्या नतीजे निकालेगी। इसके लिए अगर वह मुझे ताड़ना देती तो मुझे खुशी होती, क्योंकि मैं सचमुच ताड़ना का पात्र था, लेकिन जैसा कि अक्सर होता है, काल्पनिक शिकायतें प्रमुख और निश्चित अपराध गौण हो जाते हैं। सचमुच जीवन कितना सुन्दर होता और हमारी बुराइयां कितनी सहनीय होतीं, यदि हम अपने द्वार कल्पना के भूतों के लिए न खोलकर वास्तविक बुराइयों के ही लिए खोला करते !

पर मैं विषय से भटककर उन बातों की चर्चा करने लगा हूं, जो किसी प्रवचन के लिए उपयुक्त हो सकती हैं। मैं तो गरट्रूड के मानसिक और नैतिक विकास के इतिहास को यहां देना चाहता हूं, और अब उसी विषय पर मुझे आना चाहिए।

मैंने आशा की थी कि मैं गरट्रूड के विकास पर सिलसिलेवार विचार कर सकूंगा। इसलिए मैंने उसकी कहानी को विस्तार के साथ कहना शुरू किया था। पर उसके विकास-क्रम की सारी अवस्थाओं को बारीकी से बताने के लिए न सिर्फ मेरे पास समय की कमी है, बल्कि उनकी तरतीब को याद करना इस समय मेरे लिए बहुत ही कठिन है। कहानी कहते-कहते मैं गरट्रूड द्वारा कही गई बातों तथा उसके साथ हुए अपने वार्तालापों की चर्चा करने लगा हूं। वह हाल ही की बात है। जो आदमी इस कहानी को पढ़ेगा, उसे निस्सन्देह इस बात पर बड़ा अचम्भा होगा कि किस तरह गरट्रूड इतने थोड़े समय में अपने विचारों को इतने सही ढंग से व्यक्त करने लगी और साथ-ही-साथ इतनी चतुराई से तर्क भी करने लगी। सच तो यह है कि उसकी प्रगति आश्चर्यजनक रूप से तेज थी। मुझे उसकी उस तत्परता पर अचरज होता था, जिससे उसका मस्तिष्क मेरे द्वारा दिये गए मानसिक भोजन को ग्रहण कर लेता था। वास्तव में वह हर चीज को फौरन पकड़ लेती थी और उसे पचाने की सतत चेष्टा करके उसे आत्मसात कर लेती थी। मेरे लिए यह बात भी हैरत में डालनेवाली थी कि वह मेरे विचारों को एकदम भांप लेती थी और उन्हें लांघकर आगे बढ़ जाती थी। एक पाठ से दूसरे पाठ पर पहुंचने की उसकी तेजी को देखकर मैं अपने शिष्य को पहचान नहीं पाता था।

७/

कुछ महीने बीत गये और अब किसी भी बात से यह नहीं लगता था कि उसकी बुद्धि इतने लम्बे समय तक कुण्ठित पड़ी रही थी। विकास की इस प्रारम्भिक अवस्था में भी उसने औसत लड़कियों की अपेक्षा अधिक विवेक और निर्णयात्मक क्षमता का प्रदर्शन किया। अधिकांश लड़कियां तो बाह्य जगत में उलझी रहती हैं और व्यर्थ के कामों में संलग्न रहने के कारण सही बातों पर पूरा ध्यान नहीं दे पातीं।

मेरा खयाल है, हमने जितना शुरू में सोचा था, गरट्रूड उससे कहीं ज्यादा बड़ी उम्र की थी। वस्तुतः उसकी नेत्रहीनता नाना प्रकार से उसके लिए लाभप्रद सिद्ध हुई। मैं उसकी तुलना शारलट से किया करता था, जिसका ध्यान बड़ी आसानी से छोटी-छोटी चीजों से इधर-उधर भटक जाता था।

कहने की आवश्यकता नहीं कि गरट्रूड पढ़ने के लिए बहुत उत्सुक थी, लेकिन मैं चाहता था कि जहां तक सम्भव हो, मैं उसके मस्तिष्क के सम्पर्क में रहूं, इसलिए मैंने उसे अधिक पढ़ने से रोका और आग्रह किया कि मेरी अनुपस्थिति में वह ज्यादा न पढ़े, खासकर बाइबिल कदापि न पढ़े; क्योंकि ऐसा करना एक प्रोटेस्टेन्ट के लिए बड़ा अजीब दिखाई देता था। इस बात को मैं

आगे चलकर ज्यादा अच्छी तरह समझाऊंगा, लेकिन इस समय मैं एक छोटी-सी घटना का उल्लेख करना चाहता हूं, जो संगीत से सम्बन्ध रखती है और जहां तक मुझे याद आता है, वह न्यू चैटल के वाद्य-गान के कुछ ही समय पश्चात् घटी थी।

हां, मेरे ख्याल में वह गर्मियों की छुट्टियों से, जिनमें जैक्स घर आया था, तीन हफ्ते पहले की घटना है। इस बीच मैं अक्सर अपने गिरजाघर के छोटे-से हारमोनियम को गरट्रूड के साथ बजाने बैठ जाता था। यह हारमोनियम साधारणतः एक दूसरी महिला बजाया करती थी। गरट्रूड उस समय इसी महिला के साथ रह रही थी। इस महिला ने गरट्रूड को संगीत सिखाना अभी आरम्भ नहीं किया था। हालांकि मैं संगीत से प्रेम रखता हूं, फिर भी मैं उसके बारे में अधिक नहीं जानता, इसीलिए जब मैं हारमोनियम लेकर गरट्रूड के पास बैठता, तब मुझे यह नहीं लगता था कि मैं उसे कुछ सिखा सकूंगा।

"नहीं," गरट्रूड ने पहले पाठ के बाद मुझसे कहा, "अच्छा हो कि आप मेरे पास से चले जायं। मैं अपने आप ही बाजा बजाने की कोशिश करूंगी।"

मैं बड़ी खुशी से उसके पास से हट आया, क्योंकि गिरजा मुझे उपयुक्त स्थान नहीं दिखाई देता था, जहां मैं उस स्थान की पवित्रता के प्रति आदर-भाव होने के कारण तथा बातें उड़ने के डर से गरट्रूड के साथ अकेला रहता। हालांकि मैं ऐसी बातों पर ध्यान नहीं देता था, फिर भी इस मामले का सम्बन्ध मुझसे ही नहीं, बल्कि गरट्रूड से भी आता था। इसलिए जब मुझे जाना होता था, मैं उसे गिरजा ले जाता था और अक्सर घंटों के लिए

वहां छोड़ देता था तथा लौटते समय उसे साथ ले आता था। इस प्रकार वह बड़ी शान्ति से अपना समय ध्वनियों को समझने में खर्च करती थी। शाम को भी मैं उसे स्वरों के मेल पर विचार करते और आनन्द में डूबे हुए पाता था।

मुश्किल से छह महीने बीते होंगे कि अगस्त के शुरू के दिनों में एक दिन ऐसा हुआ कि मैं एक गरीब विधवा के यहां गया, जिसे दिलासा की बड़ी जरूरत थी, पर वह मुझे घर पर नहीं मिली। इसलिए मैं तत्काल गरट्रूड को लेने के लिए गिरजा चला गया, जहां मैं उसे छोड़ आया था। गरट्रूड को आशा नहीं थी कि मैं इतनी जल्दी लौट आऊंगा। मुझे यह देखकर बड़ा ही आश्चर्य हुआ कि जैक्स उसके पास बैठा था। दोनों में से किसी को भी मेरे अन्दर आने का पता न चला, क्योंकि मेरे आने से जो थोड़ी-बहुत आहट हुई, वह बाजे की आवाज में दब गई। किसी की खुफियागीरी करना मेरा स्वभाव नहीं है, लेकिन जिस चीज का सम्बन्ध गरट्रूड से था, वह मुझसे भी जुड़ी हुई थी। इसलिए बहुत ही दबे पांव मैं कुछ सीढ़ियां चढ़कर चुपचाप गैलरी में पहुंचा। वह एक ऐसी जगह थी, जहां से मैं सबकुछ बहुत अच्छी तरह देख सकता था। मुझे कहना चाहिए कि जितनी देर मैं वहां रहा, उन दोनों में से किसीका मुझे एक भी ऐसा शब्द सुनाई नहीं पड़ा, जिसे वे मेरे सामने न कह सकते। लेकिन जैक्स उससे बहुत सटकर बैठा था और कई बार मैंने देखा कि उसने गरट्रूड का हाथ पकड़कर बताया था कि अंगुलियां पर्दों पर इस तरह चलानी चाहिए। क्या यह अपने-आप में एक अजीब-सी बात नहीं थी कि गरट्रूड ने जैक्स से पाठ और मार्ग-दर्शन लेना

स्वीकार किया, जबकि वह पहले मुझसे लेने से इन्कार कर चुकी थी—यह कहकर कि वह स्वयं ही अभ्यास करेगी! मैं जितना सहन कर सकता था, उससे कहीं अधिक मुझे आश्चर्य और वेदना हुई और मैं उनके बीच विघ्न डालने ही वाला था कि मैंने देखा, जैक्स ने अचानक घड़ी निकाली।

"मुझे अब तुम्हारे पास से चले जाना चाहिए," वह बोला, "पापा अब ज़रा-सी देर में वापस आ जायंगे।"

इतना कहकर उसने उसके हाथ को, बिना उसकी ओर से किसी प्रकार की रुकावट के, उठाया और अपने होठों तक ले गया। अनन्तर वह चला गया। कुछ क्षण बाद मैं चुपचाप सीढ़ियां उतरकर नीचे पहुंचा और मैंने गिरजे का दरवाजा खोला, जिससे गरट्रूड को मेरे आने की आहट मिल जाय और वह सोचे कि मैं अभी-अभी वहां आया हूं।

"गरट्रूड, घर चलने को तैयार हो न? कहो, तुम्हारा पाठ कैसा चल रहा है?"

"बहुत अच्छा," उसने अत्यन्त स्वाभाविक स्वर में उत्तर दिया, "आज मैंने सचमुच कुछ प्रगति की है।"

मेरा हृदय भारी वेदना से भर उठा, लेकिन हम दोनों में से किसीने भी उस प्रसंग की कोई चर्चा नहीं की।

जैक्स के साथ एकान्त में बात करने के लिए मैं अधीर हो उठा। खाना खाने के बाद मेरी पत्नी, गरट्रूड और बच्चे जल्दी सोने चले जाते थे, जबकि जैक्स और मैं देर तक बैठे-बैठे पढ़ते रहते थे। मैं इसी क्षण की बाट जोह रहा था। लेकिन उससे कुछ कहने से पहले मुझे लगा कि भावों का ज्वार मेरे अन्दर उठ रहा

है और मेरा हृदय फटा जा रहा है। मेरी अवस्था ऐसी हो गई कि मैं अपने व्यथित करनेवाले विषय पर जैक्स से चर्चा नहीं कर सका, इसके लिए मुझे साहस ही नहीं हुआ। तब जैक्स ने अचानक यह कहकर खामोशी भंग की कि वह अपनी बाकी की छुट्टियां हमारे साथ बिताने का इरादा कर रहा है। कुछ ही दिन पहले उसने हम लोगों से कहा था कि वह आल्प्स के ऊंचे पर्वतों में भ्रमण करने जा रहा है। उसकी इस योजना को मेरी पत्नी ने और मैंने सहर्ष स्वीकृति दे दी थी। इसलिए मुझे यह समझने में देर नहीं लगी कि उसका यह आकस्मिक परिवर्तन उस घटना से अवश्य सम्बन्ध रखता है। मुझे बड़े जोर से गुस्सा आया, लेकिन उसे प्रकट करने में मुझे डर लगा कि कहीं उससे उसका मुझमें विश्वास खण्डित न हो जाय। इसलिए अपने भावों को दबाने का प्रयत्न करके यथासम्भव स्वाभाविक रूप से मैंने कहा, "लेकिन क्या तुम्हारा साथी 'ह'...पूरी तरह से तुमपर ही निर्भर नहीं है ?"

"जी, नहीं," उसने उत्तर दिया, "वह मुझपर पूरी तरह निर्भर नहीं है, और फिर उसे किसी दूसरे साथी को ढूंढ़ निकालने में कोई कठिनाई नहीं होगी। मैं यहां भी उतनी ही अच्छी तरह विश्राम कर सकता हूं, जैसे पहाड़ों पर करता। सच पूछिये तो मुझे लगता है कि पहाड़ों में घूमने के बजाय मैं अपना समय यहां ज्यादा अच्छी तरह बिता सकूंगा।"

"सचाई यह है," मैंने कहा, "तुम्हें यहां घर पर बांधे रखने के लिए कुछ मिल गया है।"

मेरे लहजे में उसे व्यंग्य अनुभव हुआ और उसने मेरी ओर

देखा, लेकिन उसके पीछे ध्येय क्या है, इसका अन्दाजा वह नहीं कर पाया। अतः निर्लिप्त भाव से बोला, "आप तो जानते ही हैं कि मुझे पर्वतारोहण की अपेक्षा पढ़ना अधिक अच्छा लगता है।"

"सो तो है ही, बच्चे !" मैंने बेधती दृष्टि से उसकी ओर देखते हुए कहा, "लेकिन क्या हारमोनियम के पाठ ज्यादा आकर्षक नहीं हैं ?"

मेरी इस बात पर वह लजा गया, क्योंकि उसने अपना हाथ उठाकर माथे पर रखा, मानो बत्ती की रोशनी से अपनी आंखों पर आड़ करना चाहता हो। लेकिन वह तत्काल सम्हल गया और ऐसे स्वर में बोला, जो मेरी राय में कुछ कम स्थिर होता तो अच्छा था।

"पापा, मुझपर इतना ज्यादा दोष न डालिये। मैं आपसे कुछ छिपाना नहीं चाहता था। आपने स्वयं उस स्वीकारोक्ति का पूर्वाभास कर लिया है, जिसे आपके सामने रखने के लिए मैं अपने को तैयार कर रहा था।"

वह बड़ी स्थिरता से बोला, मानो किसी पुस्तक को पढ़कर सुना रहा हो। उसके इस असामान्य संयम से मेरी खीज पराकाष्ठा पर पहुंच गई। यह अनुभव करके कि मैं उसे रोकनेवाला हूं, उसने अपना हाथ उठाया और कहा, "नहीं, आप बाद में बोल सकते हैं, पहले मुझे अपनी बात कह लेने दीजिये।"

लेकिन मैंने उसकी बांह पकड़ ली और उसे हिलाया।

"ओह," मैंने आवेग में कहा, "गरटूड की आत्मा की पवित्रता को नष्ट करने की अपेक्षा मैं कभी तुम्हारा मुंह न देखना

अधिक पसन्द करूंगा। मैं तुम्हारी स्वीकारोक्ति नहीं चाहता। अंधेपन, अबोधता, निष्कपटता को यों धोखा देना चाहते हो? कितनी भयंकर कायरता है यह! मैंने कभी नहीं सोचा था कि तुममें ऐसा करने की क्षमता है और उस बारे में इतनी शान्त निर्लिप्तता से बोल सकते हो! सुनो, गरट्रूड मेरे संरक्षण में है और मुझे यह गवारा नहीं होगा कि तुम उससे बात करो, उसे छुओ और आगे उससे मिलो।"

"लेकिन, पापा," वह उसी शांति से बोला, "आप विश्वास रखें, मैं गरट्रूड का उतना ही आदर करता हूं, जितना आप करते हैं। आपकी बहुत बड़ी भूल होगी, अगर आप यह सोचें कि मेरे इरादों में और मेरे हृदय में—मैं नहीं कहता कि मेरे आचरण में—कोई निन्दनीय भाव है। मैं गरट्रूड को प्रेम करता हूं और आपसे कहता हूं कि मैं उसका उतना ही आदर भी करता हूं। उसे हैरान करने अथवा उसकी अबोधता को धोखा देने का विचार मेरे लिए उतना ही घृणित है, जितना आपके लिए।"

तत्पश्चात उसने मेरे आरोप का प्रतिवाद करते हुए बताया कि उसकी इच्छा तो गरट्रूड का सहायक, मित्र और पति बनने की है। उसने यह भी कहा कि वह मुझसे उस समय तक बात करना नहीं चाहता था, जबतक कि गरट्रूड से शादी करने के सम्बन्ध में उसका मन पक्का न हो जाय। उसने बताया कि गरट्रूड स्वयं उसकी इस इच्छा को नहीं जानती।

"यह स्वीकारोक्ति है, जो मैं आपसे करना चाहता था," उसने अपनी बात को समाप्त करते हुए कहा, "इसके अलावा मेरे दिल में और कुछ नहीं है, आप विश्वास करें।"

इन शब्दों ने मेरी चेतना को जड़ बना दिया। उसकी बातें सुनते-सुनते मेरी कनपटियां फड़कने लगीं। उसे बुरा-भला कहने को जैसे मैं उतावला बैठा था, लेकिन क्रोध करने के लिए वह मुझे जितने कम मौके देता गया, उतनी ही मेरी सिट्टी गुम होती गई और उसकी बातों के अन्त में तो मुझे ऐसा लगा, मानो मेरे पास उससे कहने को कुछ रह ही नहीं गया है।

"अच्छा, अब जाकर सोओ," थोड़ी खामोशी के बाद मैंने कहा, "मैं तुम्हें कल बताऊंगा कि इस बारे में मेरा क्या विचार है।"

"आप बस इतना ही कह दीजिये कि अब आप मुझसे नाराज नहीं हैं!"

"इस बारे में सोचने के लिए मुझे रात का समय चाहिए।"

८/

जैक्स को मैंने अगले दिन सवेरे देखा तो मुझे लगा, जैसे मैं उसे पहली बार देख रहा हूं। अकस्मात मुझे अनुभव हुआ कि मेरा लड़का अब बच्चा नहीं रहा है, बल्कि जवान हो गया है। अबतक मैं उसे बालक मानता आया था, इसलिए उसका जो रहस्य अब मुझे अचानक मालूम हुआ, वह बड़ा भयंकर प्रतीत हुआ। मैं सारी रात अपने को समझाता रहा कि जो कुछ हुआ, वह बहुत ही स्वाभाविक और सामान्य है, फिर भी न जाने क्यों, मेरा असन्तोष गहरा हो गया। मुझे जैक्स को अपना निर्णय बताना था और मेरी स्वाभाविक इच्छा हुई—मानो वह अन्तर की आवाज हो—कि जैसे बने वैसे, मैं इस विवाह को रोक दूं।

मैं जैक्स को बगीचे के छोर पर ले गया।

"क्या तुमने गरट्रूड से कुछ कहा है?" मैंने पूछा।

"नहीं," उसने जवाब दिया, "शायद वह महसूस करती है कि मैं उससे प्रेम करता हूं, लेकिन मैंने अभी उससे ऐसा कहा नहीं है।"

"तब तुम वादा करो कि आगे उससे कुछ कहोगे भी नहीं।"

"पापा, आप जैसा कहें, वैसा मैं करने को तैयार हूं। लेकिन क्या मैं इसका कारण जान सकता हूं?"

कारण बताने में मुझे झिझक हुई। लगा, जो तर्क मेरे दिमाग में आये थे, वे पूरी तरह बुद्धि-संगत नहीं हैं। सच तो यह है कि उस समय तर्क की अपेक्षा मेरी अन्तरात्मा मेरा मार्ग-दर्शन कर रही थी।

"गरट्रूड अभी बहुत छोटी है," मैंने कहा, "तुम्हें यह सोचना चाहिए कि वह अभी परिपक्व नहीं हुई है। तुम जानते हो कि बदकिस्मती से वह साधारण बच्चों की तरह नहीं है और उसका विकास बहुत देर से शुरू हुआ है। वह इतनी निर्मल है कि प्रेम के पहले शब्द सुनते ही बड़ी आसानी से विह्वल हो उठेगी। इसलिए यह जरूरी है कि ऐसे शब्द उससे कहे ही न जायं। तुम कहते हो कि तुम्हारी भावना निन्दनीय नहीं है। मैं कहता हूं कि भावनाओं का होना ही गलत है, क्योंकि वे अर्द्धविकसित हैं। तुम्हारा कर्तव्य है कि तुम गरट्रूड के प्रति उस समय तक विवेक रखो, जबतक कि वह स्वयं विवेकशील न हो जाय। यह मेरी अन्तरात्मा की पुकार है।"

जैक्स में एक बड़ा गुण है। बचपन में जब मैं उससे सीधे-सादे शब्द इस्तेमाल करता था, "मैं अन्तरात्मा से यह कह रहा हूं," तो मेरा इतना कहना उसके मार्ग-दर्शन के लिए सदा पर्याप्त होता था। इस समय जब मैंने जैक्स की ओर देखा तो विचार आया कि यदि गरट्रूड अपनी आंखों से देख पाती तो वह इस लम्बे, दुबले-पतले व्यक्ति को, जो सरल किन्तु चंचल था, जिसका ललाट उन्नत था, जिसकी आंखें बड़ी-बड़ी थीं और जिसका चेहरा बालक-जैसा था, हालांकि उसपर अब अचानक गम्भीरता छा गई थी, तो वह उसकी सराहना किये बिना न रहती। जैक्स

का सिर खुला था और उसके बड़े-बड़े सलौने बाल कनपटियों पर घुंघराले हो गये थे। उनसे उसके आधे कान ढक गये थे।

"एक बात और है, जो मैं तुमसे पूछना चाहता हूं," मैंने बेंच पर से उठते हुए कहा, "तुमने कहा था कि तुम परसों जाना चाहते थे। मेरा आग्रह है कि तुम इस यात्रा को स्थगित न करो। तुम कम-से-कम पूरे एक महीने बाहर रहना चाहते थे। मेरा कहना है कि एक दिन को भी तुम अपनी अनुपस्थिति कम न करो। मंजूर है ?"

"बहुत अच्छा, पापा, मैं ऐसा ही करूंगा।"

उसका चेहरा एकदम पीला पड़ गया, इतना पीला कि उसके होठों का रंग भी फीका हो गया। लेकिन मैंने अपने को समझाया कि इस प्रकार के तात्कालिक समर्पण में कोई विशेष गम्भीरता नहीं रहती। इससे मुझे बड़ी राहत मिली। इसके अलावा जैक्स की आज्ञाकारिता का भी मुझपर गहरा असर पड़ा।

"ऐसे ही आज्ञाकारी बच्चे मुझे प्यारे लगते हैं," मैंने धीरे-से कहा और अपनी ओर खींचकर उसका माथा चूम लिया। इसमें उसने ज़रा-सी भी अन्यमनस्कता नहीं दिखाई, लेकिन इसके कारण मैंने अपने को दुखी नहीं होने दिया।

६/

मार्च १०

हमारा घर इतना छोटा है कि हम लोगों को करीब-करीब एक-दूसरे के सिर पर चढ़े रहना पड़ता है, जो कि कभी-कभी मेरे काम को देखते हुए बहुत असुविधाजनक होता है। यह असुविधा खासकर तब और भी ज्यादा खलती है जब मैं अपने घर के किसी आदमी से एकान्त में किन्तु उन्मुक्त वातावरण में बातचीत करना चाहता हूं। वैसे मैंने एक छोटा-सा कमरा अपने लिए अलग रख छोड़ा है, किन्तु उस छोटे-से कमरे में, जिसे बच्चे मेरा तपोवन कहते हैं और स्वयं उसमें पैर नहीं रख सकते, वह वातावरण मुझे अनुभव नहीं होता।

उस दिन सवेरे जैक्स अपनी पहाड़ी यात्रा के लिए जूते खरीदने न्यू चैटल गया और चूंकि मौसम बहुत अच्छा था, इसलिए बच्चे खाना खाकर गरट्रूड के साथ बाहर चले गये। बच्चे गरट्रूड को अपनी देखरेख में ले लिया करते हैं, जबकि गरट्रूड स्वयं अपने को उनकी अभिभाविका बना लेती है। मुझे यह देखकर बड़ी प्रसन्नता होती है कि शारलट गरट्रूड का विशेष ध्यान रखती है।

चाय के समय मैं एमिली के साथ अकेला रह गया। यही तो

मैं चाहता था, क्योंकि मैं उससे बात करने को इच्छुक था। एमिली के साथ अकेले में बात करने का ऐसा मौका बहुत कम आता था, इसलिए मैं कुछ सहम-सा गया और उससे मुझे जो कहना था उसकी गम्भीरता से मुझे इतनी उत्तेजना हुई कि मुझे लगा, मानो वह सवाल जैक्स से सम्बन्ध न रखकर मुझसे ही रखता हो। मैंने कुछ इस प्रकार कहना शुरू किया—दो व्यक्ति, जो आपस में प्रेम करते हैं और सम-भाव से जिन्दगी बिताते हैं, अक्सर एक-दूसरे के लिए ऐसी पहेली बने रहते हैं, जैसे उनके बीच पत्थर की दीवार हो। ऐसे मामलों में जो शब्द बोले या सुने जाते हैं, वे उस बीच की दीवार से टकराकर बड़ी ही करुण ध्वनि उत्पन्न करते हैं। अगर सावधानी न रखी जाय तो वह दीवार और भी अधिक अभेद्य बन जाती है।...

"पिछली रात और फिर आज सुबह जैक्स मुझसे कह रहा था", एमिली के चाय बनाते-बनाते मैंने कहने की चेष्टा की, पर मेरी आवाज उतनी ही लड़खड़ा रही थी, जितनी जैक्स की स्थिर थी। "...हां, जैक्स कह रहा था कि वह गरट्रूड को चाहता है।"

"उसका यह कहना बिलकुल ठीक है," एमिली ने मेरी ओर बिना देखे और चाय बनाते हुए कहा, मानो जो कुछ मैंने कहा था, वह एक बहुत ही स्वाभाविक बात थी, या यों कहिये कि मैंने कोई ऐसी बात नहीं कही थी, जिसे वह पहले से न जानती हो।

"उसने मुझसे कहा कि वह उससे शादी करना चाहता है। उसका इरादा पक्का है।"

"यह तो होना ही था।" वह कंधे को धीरे-से झटका देकर बुदबुदाई।

"तो तुम्हें इसकी पहले से ही आशंका थी?" मैंने कुछ खीज के साथ पूछा।

"मैं तो बहुत दिनों से देख रही थी कि ऐसा होनेवाला है, लेकिन इस तरह की बातें पुरुष कभी नहीं देखता।"

एमिली का विरोध करना बेकार था, इसलिए मैंने कहा, "ऐसा था तो तुम्हें मुझको आगाह कर देना चाहिए था।"

वह थोड़ी कुटिलता से मुस्कराई, जैसाकि वह कभी-कभी अपनी खामोशी को छिपाने के लिए किया करती थी और तब अपने सिर को इधर-उधर घुमाकर बोली, "अगर मैं तुम्हें उन सब चीजों से सावधान करती रहूं, जिन्हें तुम खुद नहीं देख सकते, तब तो मेरी जिन्दगी दूभर हो जायगी।"

उसके आक्षेप का क्या मतलब था, मैं नहीं समझ पाया, न मैंने समझने की कोशिश ही की। उसपर ध्यान दिये बिना ही मैं बोला, "लेकिन मैं यह सुनना चाहता हूं कि तुम इस बारे में क्या सोचती हो?"

उसने लम्बी सांस ली और कहा, "तुम तो जानते ही हो कि इस लड़की का यहां रहना मुझे कभी पसन्द नहीं था।"

गड़े मुर्दे उखाड़ने पर झुंझलाहट को रोकना मेरे लिए मुश्किल हो गया। मैंने कहा, "हम इस बात की चर्चा नहीं कर रहे हैं कि वह हमारे यहां आकर रही।"

"लेकिन," एमिली बोली, "मैं हमेशा मानती थी कि इसका नतीजा अच्छा नहीं होगा।"

उसके साथ सुलह करने की तीव्र इच्छा से मैंने उसके ही

वाक्य को ग्रहण करते हुए कहा, "तो तुम सोचती हो कि अगर गरट्रूड के साथ जैक्स का विवाह करना पड़ा तो वह अच्छा न होगा ? यही तो मैं तुमसे सुनना चाहता था। मुझे खुशी है कि हम दोनों की इस बारे में एक राय है।"

इसके बाद मैंने उसे बताया कि जैक्स मेरी दलीलों के आगे झुक गया है और अब चिन्ता की कोई बात नहीं है। मैंने यह भी बताया कि वह अगले दिन अपने प्रवास पर चला जायगा और पूरे एक महीने बाहर रहेगा।

मैंने अपनी बात समाप्त करते हुए कहा, "तुम्हारी इच्छा है कि जब वह लौटकर आये तो गरट्रूड उससे न मिले ? यही मैं चाहता हूं। मेरे ख्याल से सबसे अच्छी बात यही होगी कि हम गरट्रूड को मदाम की देखरेख में छोड़ दें और मैं वहीं जाकर उससे मिलता रहूं। इस बात को तो तुम जानती ही हो कि उसके प्रति मेरा बड़ा गम्भीर दायित्व है। मैंने मदाम का मन टटोला था। वह हमारी मदद के लिए बिलकुल तैयार है। वह इससे बहुत प्रसन्न दिखाई देती है। वह तो उसे संगीत सिखाने के लिए पहले से ही बहुत उत्सुक है।"

एमिली मानो चुप रहने के लिए कमर कसे हुई थी, इसलिए मैंने कहा, "चूंकि हम नहीं चाहेंगे कि जैक्स वहां जाकर गरट्रूड से मिले, इसलिए मेरे ख्याल से उचित होगा कि हम सारी बात मदाम को बता दें। तुम्हारा क्या विचार है ?"

मैंने आशा की थी कि मेरे इस सवाल के जवाब में वह कुछ अवश्य कहेगी, लेकिन उसने अपने होंठ कसकर बन्द कर रखे थे, मानो न बोलने की कसम खा ली हो.

लेकिन मैं बोलता ही रहा। इसलिए नहीं कि मुझे और कुछ कहना था, बल्कि इसलिए कि मैं उसके मौन को सह नहीं पा रहा था, "शायद जैक्स अपने लौटने तक प्रेम पर विजय पा ले। उसकी जैसी उम्र में शायद ही कोई समझ पाता है कि उसे क्या चाहिए।"

"और बाद में भी तो लोग अक्सर नहीं समझ पाते।" उसने बड़े विचित्र ढंग से कहा।

उसके इस प्रकार बोलने पर मुझे बड़ी झुंझलाहट हुई, क्योंकि स्वभाव से मैं इतना स्पष्ट हूं कि छिपे कटाक्षों को आसानी से बरदाश्त नहीं कर सकता। उसकी ओर मुड़कर मैंने उससे कहा कि वह जो कुछ कहना चाहती है, साफ-साफ कहे।

"नहीं, मुझे कुछ खास नहीं कहना है," उसने बड़े दुख-भरे ढंग से जवाब दिया, "मैं सोच रही थी कि अभी एक क्षण पहले तुम यह चाह रहे थे कि जिन चीजों को तुम स्वयं नहीं देख सकते, उनके बारे में मैं तुम्हें आगाह कर दिया करूं !"

"तो ?"

"मैं सोच रही थी कि लोगों को आगाह करना हमेशा आसान नहीं होता।"

"मैं कह चुका हूं कि मुझे रहस्यमयी बातों से घृणा है और मैं सांकेतिक तथा द्विअर्थी भाषा के सिद्धान्त का विरोधी हूं। जब चाहती हो कि मैं तुम्हारी बात को समझूं तब तुम्हें अपनी बात ज्यादा साफ ढंग से कहनी चाहिए।"

शायद मेरा यह उत्तर कुछ अधिक कठोर था और इसका मुझे दुख भी हुआ, क्योंकि मैंने देखा कि क्षणभर के लिए एमिली

के होंठ कांप उठे। उसने अपना सिर एक ओर को कर लिया, फिर वह उठी और डगमगाते कदमों से कमरे में घूमने लगी।

"लेकिन, एमिली," मैंने ऊंचे स्वर में कहा, "मेरी समझ में नहीं आता कि जब सबकुछ ठीक हो गया है तब तुम दुखी क्यों हो रही हो!"

मुझे लगा, मेरी आंखों से उसे हैरानी हो रही है, इसलिए मैंने अपनी पीठ उसकी ओर कर ली, कुहनियां मेज पर टिकाईं और अपने हाथों पर अपना सिर रखकर बोला, "शायद मैंने तुमसे कुछ कड़ी बात कह दी, एमिली। मुझे माफ कर दो।"

यह सुनकर वह मेरे पीछे आई और अपनी अंगुलियों को बड़ी कोमलता से मेरे सिर पर रखकर धीमे और कांपते स्वर में सजल नेत्रों से बोली, "प्रिय..."

इसके बाद वह तेजी से कमरे के बाहर चली गई।

एमिली के जिन शब्दों को मैंने इतना रहस्यमय समझा था, वे तत्काल स्पष्ट हो गये। उस दिन मैंने समझा कि अब समय आ गया है, जब गरट्रूड को हमारे पास से चले जाना चाहिए।

१०/

मैंने हर रोज गरट्रूड को थोड़ा समय देने की जिम्मेदारी अपने ऊपर ले ली थी। एमिली से बातचीत के तीसरे दिन मेरे पास कुछ खाली समय था और चूंकि मौसम बड़ा सुहावना था, मैं गरट्रूड को जंगलों में से घुमाता हुआ जूरा के उस स्थान पर ले गया, जहां से साफ मौसम में टहनियों के बीच से, निचाई पर फैले लम्बे-चौड़े मैदान के आर-पार धुंध के झीने पर्दे में से झांकते हिममंडित आल्प्स का सौन्दर्य देखा जा सकता था। बाईं ओर सूरज छिपने जा रहा था। हमारे पास ही ढलवां भूमि पर एक चरागाह था, जिसकी घनी घास काट दी गई थी। दूर कुछ गायें चर रही थीं। इन पहाड़ी झुण्डों की हर गाय के गले में एक-एक घंटी बंधी थी।

"यहां की दृश्यावली कैसी है?" घंटियों की आवाज सुनकर गरट्रूड बोली।

जब-जब हम घूमने जाया करते हैं और जब-जब हम कहीं ठहरते हैं, गरट्रूड पूछा करती है—"यह जगह कैसी है?" यही बात उसने अब पूछी।

"लेकिन तुम तो इसे पहले से ही जानती हो," मैंने कहा, "हम लोग जंगल के छोर पर हैं, जहां से आल्प्स पर्वत साफ-साफ

देखे जा सकते हैं ।"

"क्या ये आज भी साफ दिखाई देते हैं ?"

"क्यों नहीं !"

"आपने कहा था कि इन पर्वतों की छवि हर दिन कुछ भिन्न दिखाई देती है।"

"सो तो है। पर आज उनकी तुलना किससे करूं ? अच्छा, समझ लो कि ये गरमी के प्यासे दिन की तरह हैं। शाम होने से पहले ही ये हवा में विलीन हो जायंगे।"

"अच्छा, यह बताइये, क्या सामने के इस बड़े चरागाह में कुमुदिनियां हैं ?"

"नहीं, गरट्रूड, इतनी ऊंचाई पर कुमुदिनी नहीं होतीं; होती हैं तो केवल इनी-गिनी, किसी खास किस्म की।"

"वे कुमुदिनियां भी नहीं, जो कि 'खेतों की कुमुदिनियां' कहलाती हैं ?"

"खेतों में कुमुदिनियां नहीं होतीं ।"

"न्यू चैटल के आसपास के खेतों में भी नहीं ?"

"नहीं, खेतों में वे होती ही नहीं।"

"तो हमारे प्रभु ने क्यों कहा है—'उन खेत की कुमुदिनियों को देखो' ?"

"निस्सन्देह प्रभु के युग में कुछ थीं, जिससे वह ऐसा कह सके, लेकिन आदमियों और उनके हलों के आने से पहले ही वे गायब हो गईं।"

"मुझे याद है, आपने अक्सर मुझसे कहा है कि इस दुनिया को सबसे ज्यादा जरूरत आत्मविश्वास और प्रेम की है। क्या

आपका यह ख्याल नहीं है कि अगर आदमी अपने अन्दर थोड़ा और आत्मविश्वास पैदा कर ले तो वह उन कुमुदिनियों को फिर से देख सकेगा ? जब मैं प्रभु का शब्द सुनती हूं तब मुझे ऐसा लगता है, जैसे कुमुदिनियां मेरी आंखों के सामने आ गई हैं। मैं उनका हूबहू वर्णन कर सकती हूं। करूं ? वे अग्निशिखा की घंटियों जैसी हैं—नीले रंग की, बड़ी-बड़ी घंटियां, जिनमें प्रेम की सुगन्धि भरी है और जो शाम की हवा में इधर-उधर हिल रही हैं। आप कैसे कहते हैं कि वे हमारे सामने नहीं हैं ? मैं उनकी उपस्थिति अनुभव करती हूं। देखती हूं, सारा चरागाह उनसे भरा पड़ा है।"

"जितनी तुम देखती हो, उनसे ज्यादा सुन्दर वे नहीं होतीं, गरट्रूड !"

"नहीं, यों कहिए कि उससे कम सुन्दर नहीं होतीं।"

"जितना तुम देखती हो, उतनी ही सुन्दर होती हैं।"

"और मैं आपसे कहती हूं कि अपने पूर्ण वैभव से युक्त सोलोमन भी इनमें से किसी की बराबरी नहीं कर सकता।" यीशु के ये शब्द उद्धृत करते हुए वह बोली और जब मैंने उसकी स्वर-लहरी सुनी, तब मुझे ऐसा लगा, मानो मैं उसे पहली बार सुन रहा हूं। "अपने पूर्ण वैभव से युक्त ?" ये शब्द उसने गम्भीरता से दोहराए। फिर कुछ देर के लिए चुप हो गई। मैंने आगे कहा, "गरट्रूड, मैंने तुमसे कहा था कि जिनके आंखें होती हैं, वे देख नहीं पाते।" और तभी मेरे अन्तर की गहराई से प्रार्थना के ये बोल उठे, "हे प्रभो, मैं तेरा आभारी हूं कि तू छोटों पर भी वह उजागर कर देता है, जो बुद्धिमानों से छिपा रखता है।"

"काश, आप जानते," आह्लाद से भरकर वह बोली, "मैं कितनी आसानी से इस सबकी कल्पना कर लेती हूं। क्या आप चाहेंगे कि मैं यहां की दृश्यावली का वर्णन करूं ? हमारे पीछे, हमारे ऊपर और हमारे चारों ओर देवदार के ऊंचे-ऊंचे पेड़ हैं, जिनके लाल तने हैं और उनमें से लाख की खुशबू आ रही है। उनकी काली-काली समानान्तर शाखाएं फैली हुई हैं और जब हवा उन्हें झुकाने की कोशिश करती है, तब वे कराह उठती हैं। हमारे पैरों के पास पहाड़ों के ढलवां डैस्क पर खुली पुस्तक की भांति हरा-भरा विशाल चरागाह है, जिसके रंग भिन्न-भिन्न हैं—छाया में नीले, धूप में सुनहरे। भांति-भांति के फूलों के शब्दों में वे बातें करते हैं। गायें आती हैं और अपनी घंटियों से उनपर जादू कर जाती हैं। देवता आते हैं और उन्हें पढ़ते हैं—क्योंकि आप कहते हैं न कि आदमी की आंखें बन्द रहती हैं। किताब के नीचे मुझे दूध की, धुएं और धुंध से आच्छादित, एक बड़ी नदी दिखाई देती है, जिसमें रहस्य की खाइयां छिपी हुई हैं—बहुत बड़ी नदी, जिसका एकमात्र तट दूर, बहुत दूर, सुन्दर और चकाचौंध करने वाला आल्प्स है। वहीं तो जैक्स जा रहा है। मुझे बताइये, क्या वह सचमुच कल जा रहा है ?"

"हां, वह कल जा रहा है। क्या उसने तुम्हें यह बात बताई थी ?"

"नहीं, उसने मुझे नहीं बताई, लेकिन मैंने अनुमान कर लिया। क्या वह बहुत दिनों बाद आयगा ?"

"एक महीने बाद ...गरट्रूड, मैं तुमसे कुछ पूछना चाहता हूं। तुमने मुझे यह क्यों नहीं बताया कि वह तुमसे गिरजे में

मिला था ?"

"वह दो बार आया था। मैं आपसे कुछ भी छिपाना नहीं चाहती थी, लेकिन मुझे डर था कि उस बात को सुनकर आप कहीं दुखी न हो जायं !"

"अगर तुम मुझसे नहीं कहोगी तो उससे मुझे अधिक दुख होगा।"

उसने अपना हाथ बढ़ाकर मेरे हाथ का सहारा लिया और पूछा, "जाते समय वह उदास था क्या ?"

"यह बताओ, गरट्रूड...क्या उसने यह कहा था कि वह तुमसे प्रेम करता है ?"

"नहीं, उसने यह कहा तो नहीं, पर बिना कहे ही मैं यह अनुभव कर सकती हूं। पर जितना प्रेम आप करते हैं, उतना वह नहीं करता।"

"गरट्रूड, क्या तुम्हें इस बात से दुःख होता है कि वह जा रहा है ?"

"मेरा ख्याल है कि उसका जाना अच्छा ही है। मैं उसे प्रतिदान नहीं दे सकी।"

"लेकिन मेरी इस बात का जवाब दो कि क्या तुम्हें उसके जाने से दुख होता है ?"

"आप जानते हैं कि आप ही वह व्यक्ति हैं, जिन्हें मैं प्रेम करती हूं...ओह, अपना हाथ आप अलग क्यों ले जाते हैं ? अगर आप विवाहित न होते तो मैं यह सब न कहती। कोई भी अन्धी लड़की से विवाह नहीं करता, तब हम एक-दूसरे को प्रेम क्यों न करें ? क्या इसमें कोई बुराई है ?"

"प्रेम में कभी कोई बुराई नहीं होती।"

"मुझे लगता है, मेरे हृदय में सिवा अच्छाई के कुछ नहीं है। मैं जैक्स को दुखी नहीं करना चाहती। मैं किसीको भी दुखी नहीं करना चाहती।...मैं तो बस सुख ही देना चाहती हूं।"

"जैक्स तुमसे यह कहने की सोच रहा था कि तुम उससे शादी कर लो।"

"क्या आप उसके जाने से पहले मुझे उससे बात कर लेने देंगे? मैं उसे समझाना चाहूंगी कि वह मुझे प्रेम करना छोड़ दे। आप समझे या नहीं कि मैं किसीसे भी विवाह नहीं कर सकती? आप मुझे उससे बात कर लेने देंगे न?"

"आज शाम को।"

"नहीं, कल उसके जाने से पहले..."

सूर्य पूर्ण आभा के साथ अस्त हो रहा था। हवा में गरमी थी। हम लोग उठे और बात करते हुए, नीरव रास्ते पर, घर की ओर चल दिये।

११

२५ अप्रैल

इस पुस्तक का लिखना मैंने कुछ समय के लिए बन्द कर दिया था। आखिर बर्फ पिघली और सड़कें चलने योग्य हुईं। बहुत-से काम, जिन्हें मैंने अपने गांव के बाहरी दुनिया से कट जाने के कारण रोक रखा था, एकाएक सामने आ पड़े।

जो कुछ मैंने आजतक लिखा था, उसको मैंने कल रात पढ़ा।

मेरे हृदय में जो भावना अबतक छिपी-छिपी पनप रही थी, उसे मैं अब ठीक-ठीक जान गया हूं। यह अजीब-सी बात है कि आजतक मैं भ्रम में रहा, यानी एमिली के शब्द मुझे रहस्यमय जान पड़े और गरट्रूड की स्पष्ट घोषणा के बाद भी मैं यही सोचता रहा कि मैं उसे प्रेम करता हूं।

गरट्रूड ने मुझे जो वचन दिये, उनकी निर्दोषिता और स्पष्टता से मैं आश्वस्त हो गया। मैंने अपने मन में सोचा कि यह छोटी बच्ची है, वास्तविक प्रेम जटिलताओं और आवेगों के बिना नहीं हो सकता। जहांतक मेरा सम्बन्ध था, मैंने अपने को समझाया कि मेरा प्रेम उसके लिए वैसा ही है, जैसा किसी पीड़ित बच्चे के लिए होना चाहिए। मैंने उसकी उसी तरह देखभाल की, जिस तरह किसी रोगी की की जाती है और इसीलिए उसके

प्रति मेरा जो तीव्र झुकाव था, उसे मैंने नैतिक दायित्व बना लिया।

जैक्स चला गया। (उसके जाने से पहले मैंने गरट्रूड को उससे मिलने दिया और जब छुट्टियां खत्म होने के आखिरी कुछ दिनों में वह लौटा, तब उसने ऐसा दिखाया, मानो वह गरट्रूड से बचता हो या अगर उससे बात करता तो सिर्फ मेरे सामने।) उसके जाने के बाद हमारी जिन्दगी शान्ति से अपने रास्ते पर चल पड़ी। व्यवस्था के अनुसार गरट्रूड मदाम लुईस के यहां रहने चली गई। वहां मैं उससे रोज मिल आता था। लेकिन मैंने यह निश्चय कर लिया था कि उससे कोई भी ऐसी बात नहीं करूंगा, जिससे हमारे उत्तेजित होने की सम्भावना पैदा हो। मैं उससे केवल पादरी के रूप में बात करता था और वह भी ज्यादातर मदाम लुईस की ही उपस्थिति में बात करती थी। मैं मुख्यतः धार्मिक शिक्षा देने और ईस्टर के पावन भोज-समारोह में सम्मिलित होने के लिए उसे तैयार करने में लगा रहता था। मैं स्वयं उस भोज में शामिल हुआ।

यह एक पखवारे पहले की बात है। मुझे यह देखकर अचरज हुआ कि जैक्स, जो अपनी छुट्टियां हमारे साथ बिता रहा था, हमारे साथ प्रभु यीशु के भोज में नहीं गया। मुझे यह कहते बड़ा दुख होता है कि एमिली भी वहां नहीं आई। हमारे विवाह के बाद इस प्रकार का यह पहला अवसर था। ऐसा जान पड़ता था, मानो दोनों ने यह सोच और तय कर रखा था कि मेरी खुशी पर पानी फेरने के लिए वे उस पवित्र समारोह से अलग रहेंगे। मुझे इस बात की प्रसन्नता थी कि गरट्रूड इस बात

को नहीं देख सकी और इस विषाद के कड़वे घूंट को मैंने अकेले ही पिया। ऐमिली को मैं अच्छी तरह से जानता था। उसने खुलकर कभी मेरी अवज्ञा नहीं की, लेकिन अपने आक्रोश को व्यक्त करने का उसने एक रास्ता यह बना रखा था कि वह मुझे एक खास तरह के अकेलेपन में छोड़ देती थी। मुझे यह सोचकर गहरी वेदना हुई कि इस आदत ने उसकी आत्मा पर इतना असर डाल दिया था कि वह एक ऊंचे ध्येय से विमुख हो गई।

जहां तक जैक्स के भोज में न आने का सम्बन्ध है, इसका बिलकुल दूसरा कारण था, जैसा कि कुछ दिनों बाद उससे बात करने पर मुझे मालूम हुआ। सच तो यह है कि उसे यीशु में कोई अलौकिकता नहीं दिखाई देती थी।

८ मई

कल डा० मार्टिन्स आये थे। उन्होंने यंत्र से बहुत देर तक गरट्रूड की आंखों की परीक्षा की और मुझसे कहा कि लोज़ान के नेत्र-विशेषज्ञ डा० राक्स से उन्होंने गरट्रूड के बारे में कह दिया है और वह अपनी जांच की रिपोर्ट उन्हें देंगे। उन दोनों का विचार है कि गरट्रूड का आपरेशन करके उसे अच्छा किया जा सकता है, लेकिन उनका कहना है कि जबतक पूरा निश्चय न हो जाय, तबतक इस बारे में गरट्रूड से कुछ नहीं कहना चाहिए। गरट्रूड की आशाओं को जाग्रत करने से क्या फायदा, यदि उन पर तुषारपात होने का खतरा हो!

१० मई

ईस्टर में जैक्स और गरट्रूड दोनों मिले, पर मेरी उपस्थिति में। गरट्रूड जैक्स के पास आई थी। दोनों ने मामूली बातचीत

की। मुझे जितना भय था, जैक्स उससे कम उत्तेजित था। मैंने मन-ही-मन सोचा कि यदि उसका प्रेम तीव्र होता तो वह उस-पर इतनी आसानी से काबू नहीं पा सकता था, हालांकि पिछले साल उसके जाने से पहले गरट्रूड ने उससे कह दिया था कि उसका प्रेम करना बेकार है।

मैंने देखा कि जैक्स अब गरट्रूड को 'तू' कह कर सम्बोधित नहीं करता था, बल्कि 'आप' कहता था, जो वास्तव में उचित भी था। ऐसा करने के लिए मैंने उससे कहा नहीं था, स्वयं ही उसके मन में यह बात आई थी।

मैं सोचता हूं, जैक्स का यह समर्पण बिना संघर्ष के सम्भव नहीं हुआ होगा। आश्चर्य की बात यह है कि अपनी भावनाओं पर उसने जो बंधन लगाया, वह अब उसे स्वयं हितकर मालूम होता था। वह चाहता था कि हर कोई ऐसा ही करे।

मैं जानता हूं कि जैक्स को प्रभु यीशु से संत पाल के शब्द अधिक सारयुक्त प्रतीत होते हैं। मैं उसे उसीके अस्त्र से हराना चाहता था, इसलिए एक दिन मैं उसके कमरे में एक छोटा-सा नोट छोड़ आया, जिसमें लिखा था—"जो खाता है, उसको उससे घृणा नहीं करनी चाहिए, जो नहीं खाता; क्योंकि प्रभु यीशु ने उसे अपनाया है।"

मैं उसके बाद के शब्द भी नकल कर सकता था—"मैं जानता हूं और प्रभु यीशु ने मुझे समझाया है कि अपने आपमें कुछ भी मलिन नहीं है, लेकिन जो कोई व्यक्ति किसी चीज को मलिन मानता है, वह उसके लिए मलिन होती है।" लेकिन मैंने वह लिखा नहीं, क्योंकि मुझे भय था कि कहीं जैक्स गरट्रूड को

लेकर किसी गलत व्याख्या का मुझपर सन्देह न करे। ऐसा सन्देह एक क्षण को भी मैं उसके मन में नहीं उठने देना चाहता था। स्पष्ट ही यह भोजन का सवाल था, लेकिन धर्म-ग्रन्थों में कितने ही स्थलों पर हमें शब्दों को दो-दो, तीन-तीन अर्थ देने के लिए प्रेरित किया जाता है। यह विवाद का विषय नहीं है। इस ग्रन्थ का आशय तो बहुत ही व्यापक और गहन है। उसपर बन्धन कानून का नहीं, प्रेम का होना चाहिए। संत पाल ने बाद में कहा है—"लेकिन अगर तुम्हारा भाई तुम्हारे भोजन से दुखित होता है तो समझो कि तुम प्रेम की रीति से नहीं चलते।" जहां प्रेम असफल होता है, वहीं पर हमारे शस्त्र खड़खड़ाते हैं, और वहीं बुराई हम पर धावा बोलती है। प्रभो, हमारे हृदय से वह सब निकाल बाहर करो, जिसका सरोकार प्रेम से न हो।"

मैंने जैक्स को उत्तेजित कर दिया था। अगले दिन सवेरे अपनी मेज पर मुझे वही नोट मिला, जिसपर मैंने जैक्स के लिए कुछ लिख दिया था। उस नोट के पीछे जैक्स ने संत पाल के उसी अध्याय में से लिखा था—"अपने भोजन से उस व्यक्ति का हनन मत कर, जिसके लिए मसीह ने अपने प्राण तजे थे।"

मैंने सारे अध्याय को फिर से पढ़ा। वह अनन्त वाद-विवाद का आरम्भिक बिन्दु था, और क्या गरट्रूड को इन जटिलताओं से व्यथित किया जाना उचित था? क्या इन बादलों से उसके गगन के प्रकाश को धूमिल करना ठीक था? जब मैं उसे शिक्षा देता हूं और उसे यह विश्वास करने देता हूं कि अगर कोई पाप है तो वह दूसरों की प्रसन्नता को खतरे में डालना है, तो क्या मैं यीशु के निकट नहीं रहता और गरट्रूड को प्रभु के पास नहीं

रखता ?

खेद है, कुछ ऐसी आत्माएं भी हैं, जिनके लिए प्रसन्नता अनुकूल नहीं होती। वे नहीं जान सकतीं, जानतीं भी नहीं कि प्रसन्नता का लाभ कैसे लें। मैं अपनी एमिली के बारे में सोच रहा हूं। मैं उससे कहा करता हूं और उस पर दबाव भी डालना चाहता हूं कि वह खुश रहे। मैं चाहता हूं कि सबको ऊंचा उठा कर प्रभु तक पहुंचाऊं, लेकिन एमिली नहीं चाहती। वह उन फूलों की तरह सिकुड़ जाती है, जो धूप में कभी नहीं खिलते। हर चीज, जिसे वह देखती है, उसमें बेचैनी और व्यथा पैदा करती है।

उस दिन उसने मुझसे कहा, "क्या फायदा है इस सबसे ! हम सब अन्धे नहीं हो सकते।"

ओह! उसके इस व्यंग्य से मुझे कितनी चोट लगती है और उससे विचलित न होने के लिए मुझे कितनी हिम्मत जुटानी पड़ती है! फिर भी मुझे लगता है, उसे यह समझना चाहिए कि गरट्रूड की नेत्रहीनता की बात करना मेरे लिए विशेष रूप से कष्टदायक है। वह वास्तव में मुझे यह अनुभव कराना चाहती है कि गरट्रूड में मैं सबसे अधिक जिस चीज की सराहना करता हूं, वह उसकी अपरिमित नम्रता है। मैंने कभी गरट्रूड को किसीके प्रति तनिक भी क्रोध व्यक्त करते हुए नहीं सुना। सच तो यह है कि मैं कभी उसे ऐसी कोई बात सुनने ही नहीं देता, जो उसे बुरी लगे।

जो आत्मा प्रमुदित होती है, वही अपने चारों ओर प्रेम की आभा से प्रसन्नता फैलाती है। सो एमिली के इर्द-गिर्द हमेशा उदासी

और मनहूसियत छाई रहती थी। सारे दिन मेहनत करके, बीमार, गरीब और दुखियों को देखकर, जब मैं थकान से चूर होकर लौटता हूं, और मेरा दिल चाहता है कि मुझे आराम और स्नेह मिले, तब अक्सर देखता हूं कि चिंताएं, आरोप और झगड़े मुझे चारों ओर से घेरे हुए हैं। मुझे उनसे सर्दी, हवा और वर्षा की अपेक्षा हजार गुना डर लगता है। मैं अच्छी तरह जानता हूं कि हमारी रोजली अपने रास्ते चलना चाहती है, लेकिन वह हमेशा ही गलती पर नहीं होती, और न एमिली उसे झुकाने के लिए जो कोशिश करती है, वह हमेशा सही ही होती है। मैं यह भी जानता हूं कि गैस्पर्ड और शारलट बहुत ही उद्दण्ड हैं, लेकिन अगर एमिली उन्हें कुछ कम ताड़ना दे तो क्या यह अधिक लाभप्रद नहीं होगा? उन्हें बार-बार टोकने, भला-बुरा कहने और उनपर दोषारोपण करने से बात का प्रभाव उसी प्रकार समाप्त हो जाता है, जिस प्रकार समुद्र-तट के पत्थरों के तेज किनारे लहरों से घिस कर साफ हो जाते हैं। बच्चों के लिए एमिली के आरोप उतने हैरान करनेवाले नहीं हैं, जितने कि वे मेरे लिए हैं। मुझे मालूम है कि क्लॉड के दांत निकल रहे हैं, (जब कभी वह चिल्लाता है तब उसकी मां यही कहती है) लेकिन क्या इससे उसको चिल्लाने का प्रोत्साहन नहीं मिलता ? क्या एमिली और सारा दौड़ने, उसे उठाने और उसकी पीठ थपथपाने के लिए प्रेरित नहीं होतीं ? मुझे पूरा विश्वास है कि क्लॉड कभी बार-बार नहीं चिल्लाएगा, अगर उसे मेरी अनुपस्थिति में एकाध बार जी भरकर चिल्लाने के लिए छोड़ दिया जाय। लेकिन मैं जानता हूं कि उसे सबसे अधिक बिगाड़ने का वही समय होता है।

सारा अपनी मां की तरह है और इसीलिए मैं चाहता था कि उसे स्कूल भेज दूं। दुःख है कि सारा अपनी इस उम्र में (जब मेरी और एमिली की सगाई हुई थी) वैसी नहीं है, जैसी कि उसकी मां थी। भौतिक चिन्ताओं ने एमिली का क्या हाल कर डाला है! लेकिन चिन्ताएं वह स्वयं पैदा करती है। वास्तव में मेरे लिए बड़ा मुश्किल हो गया है कि आज मैं उसमें उस देवी का स्वरूप देखूं, जो किसी समय मेरे हृदय की उच्च भावना को मुस्करा कर बढ़ावा देती थी, जिसके विषय में मैं कल्पना किया करता था कि वह मेरी प्रत्येक आशा और निराशा में साझीदार बनेगी और जिसे मैं स्वर्ग के अपने मार्ग की दर्शिका मानता था या प्रेम ने उन दिनों मुझे अन्धा बना दिया था ? आज मैं देखता हूं कि सारा भी अपनी मां की भांति घर की चीजों में फंसी रहती है। उसके चेहरे पर किसी प्रकार की आंतरिक चमक नहीं है और वह बहुत ही क्रुद्ध तथा कठोर दिखाई देती है। कविता में या और कुछ पढ़ने में उसे किसी प्रकार का रस नहीं है। उसकी मां और उसके बीच मुझे कोई ऐसा वार्तालाप सुनाई नहीं देता, जिसमें भाग लेने को मेरा मन करे।

इस पतझड़ के मौसम में मदाम के घर जाकर चाय पीने की मेरी आदत पड़ गई है। जब-जब मैं काम से जल्दी छुट्टी पा लेता हूं, तब-तब वहीं चला जाता हूं। मैंने यह नहीं बताया कि पिछले नवम्बर से मदाम ने उन तीन छोटी अन्धी लड़कियों को भी अपने यहां रख लिया है, जिन्हें मार्टिन्स ने उसके सुपुर्द किया है। गरट्रूड उन्हें पढ़ना और छोटे-मोटे काम करना सिखाती है।

जब-जब मैं मदाम के घर जाता हूं, मुझे वहां का वातावरण

बड़ा ही शान्तिदायक, आरामदेह और मैत्रीपूर्ण मालूम होता है और जब वहां गये बिना दो-तीन दिन निकल जाते हैं तब मुझे उसकी बड़ी याद आती है। कहने की आवश्यकता नहीं कि मदाम के पास इतने साधन हैं कि वह गरट्रूड और तीन छोटी लड़कियों का खर्चा बिना किसी परेशानी के उठा लेती है। तीन नौकरानियां बड़ी निष्ठा के साथ उसकी मदद करती हैं। इससे अधिक सौभाग्य और आराम मिलने की कौन कल्पना कर सकता है ? गरीबों में मदाम की हमेशा रुचि रहती है। वह बहुत ही धार्मिक स्त्री है। वह इस दुनिया की नहीं दिखाई देती और ऐसा लगता है, जैसे इस संसार में वह केवल प्रेम के लिए जीती है। उसके सिर के बाल सफेद हो गये हैं, फिर भी उसकी हँसी बच्चों जैसी है। उसकी चाल बड़ी सुहावनी है और उसका स्वर बड़ा मधुर है। गरट्रूड ने उसीके तौर-तरीके सीख लिये हैं, उसीके ढंग से बोलती है और उसीका जैसा स्वर उसने बना लिया है। दोनों की समानता के लिए मैं उन्हें चिढ़ाया करता हूं, लेकिन उस समानता को दोनों में से कोई भी स्वीकार नहीं करता। जब-जब उनके साथ होने और उन्हें आस-पास बैठे देखने का समय मिलता है, मुझे अच्छा लगता है। गरट्रूड मदाम के सिर पर झुकी होती है या उसका हाथ अपने हाथ में पकड़े होती है। उस समय उनकी आत्मा के दर्पण में प्रतिबिम्बित कविता के सौंदर्य को देखना बड़ा ही सुखद मालूम होता है। छोटी-छोटी बच्चियां तक उससे प्रभावित हो उठती हैं। इस प्रेम और शान्ति के वातावरण में उन बच्चियों का विकास आश्चर्यजनक रूप में हो रहा है। जब मदाम ने मुझे

बताया कि वह उन लड़कियों को नृत्य सिखावेगी, ताकि उनकी सेहत बने और उनका मनोरंजन भी हो, तब मुझे हँसी आई। लेकिन अब मैं उन लड़कियों की विकसित संगीतमयी शालीनता की सराहना करता हूं, हालांकि वे स्वयं उसे देख सकने में समर्थ नहीं हैं। मदाम ने मुझे बताया कि यद्यपि वे लड़कियां आंखों से देख नहीं सकतीं, फिर भी अपनी गति की लय को शारीरिक रूप से अनुभव कर सकती हैं। गरट्रूड बड़ी ही शान्ति और माधुर्य से उनके नृत्य में भाग लेती है और बड़ी आनन्दित होती है। कभी-कभी जब मदाम उन लड़कियों को नृत्य की मुद्राएं बताती है तब गरट्रूड पियानो बजाती है। गरट्रूड की प्रगति को देखकर अचरज होता है। वह अब हर इतवार को गिरजे में बाजा बजाती है। इतवार को वह हमारे साथ खाना खाने आती है। बच्चियां उसे देखकर बहुत खुश होती हैं, हालांकि उनकी रुचियां कुछ दूसरे ही प्रकार की होती जा रही हैं। एमिली भी अब अधिक नहीं खीजती और हम लोगों का खाना बिना किसी बदमजगी के चलता है। खाना खाने के बाद सारा परिवार गरट्रूड के साथ मदाम के घर चला जाता है और वहां चाय पीता है। बच्चों का इससे खूब मनोरंजन होता है और मदाम उनपर मिठाइयां लाद देती है। एमिली इस सबके कारण दस बरस छोटी मालूम देने लगी है। मेरा ख्याल है कि रोजमर्रा की थकानभरी जिन्दगी में अब इस मनोरंजन को छोड़ना उसके लिए मुश्किल होगा।

१२/

१८ मई

मौसम अच्छा हो गया था। मैं गरट्रूड को साथ लेकर बाहर निकला। हम लोग बहुत दिनों से बाहर नहीं गये थे। एक लम्बे अरसे के बाद मुझे उसके साथ एकान्त मिला।

हम लोग तेजी से आगे बढ़े। हवा के मारे उसका चेहरा लाल हो गया और उसके बाल उड़-उड़कर उसके मुंह पर आने लगे। मैंने दो-तीन फूल तोड़कर उसके बालों में लगा दिये।

हम लोगों ने अभी तक एक-दूसरे से कोई बात नहीं की थी कि गरट्रूड ने अपने नेत्रहीन चेहरे को मेरी ओर मोड़ा और अचानक पूछा, "क्या आप सोचते हैं कि जैक्स अब भी मुझे प्यार करता है?"

"तो क्या उसने तुम्हें छोड़ने का इरादा कर लिया है?" मैं भी फौरन पूछ बैठा।

"लेकिन क्या आप सोचते हैं कि उसे यह पता है कि आप मुझसे प्रेम करते हैं?"

पिछले छः महीने से हम लोगों के बीच प्रेम का एक शब्द भी नहीं आया था। हम लोग कभी एकान्त में मिले भी नहीं थे और यह अच्छा ही था। इसलिए गरट्रूड के सवाल से मेरा दिल इतने

जोर से धड़कने लगा कि मुझे अपनी चाल कुछ धीमी करनी पड़ी।

"गरट्रूड, यह बात हर कोई जानता है कि मैं तुम्हें प्यार करता हूं।" मैंने ऊंची आवाज में कहा, लेकिन इससे उसका समाधान नहीं हुआ।

"नहीं-नहीं, आपने मेरे सवाल का जवाब नहीं दिया।"

थोड़ी देर निस्तब्धता रही, फिर उसने सिर झुका कर कहा, "एमिली आंटी इस बात को जानती हैं और मुझे पता है कि इससे वह दुखी होती हैं।"

"वह तो किसी-न-किसी बात से दुखी रहेंगी ही।" मैंने अस्थिर आवाज में प्रतिवाद करते हुए कहा, "दुखी रहना उनका स्वभाव है।"

"ओह! आप मुझे हमेशा दिलासा देने की कोशिश करते हैं," उसने कुछ अधीरता से उत्तर दिया, "लेकिन मुझे दिलासा नहीं चाहिए। मुझे विश्वास है कि ऐसी बहुत-सी बातें हैं, जिन्हें आप मुझे इसलिए नहीं बताते कि उनसे मुझे हैरानी होगी या दुख पहुंचेगा। बहुत-सी चीजें हैं, जिन्हें मैं नहीं जानती, इससे कभी-कभी..."

उसकी आवाज मंद होती गई और फिर वह चुप हो गई, जैसे उसे सांस ही नहीं आ रही हो। मैंने उसके आखिरी शब्दों को लेकर पूछा, "इससे कभी-कभी क्या होता है ?..."

उसने बड़े दुख से कहा, "मैं सोचती हूं कि मैं जिस आनन्द के लिए आपकी ऋणी हूं, वह मेरे अज्ञान पर आधारित है।"

"लेकिन गरट्रूड..."

"नहीं, मुझे कहने दीजिए। मुझे इस तरह का आनन्द नहीं चाहिए। आप समझ लीजिए कि मैं सुखी होने की चिन्ता नहीं करती। मैं सब चीजें जानना चाहती हूं। बहुत-सी चीजें निश्चय ही दुख से भरी होती हैं, मैं उन्हें देख नहीं सकती, लेकिन आपको उन्हें मुझसे अलग रखने का अधिकार नहीं है। जाड़े के इन महीनों में मैंने बहुत सोचा है। मुझे सन्देह है कि सारी दुनिया उतनी सुन्दर नहीं है, जितनी कि आपने मुझे बताई है। सच यह है कि वह सुन्दरता से बहुत दूर है।"

"यह ठीक है कि इन्सान ने दुनिया को कलुषित कर दिया है।" मैंने बहुत दबी जबान में कहा, क्योंकि गरट्रूड के विचारों के उद्दाम प्रवाह ने मुझे डरा दिया था। मैंने उसके प्रवाह को एक ओर करने की कोशिश की, हालांकि मैं यह आशा करने की हिम्मत नहीं कर सकता था कि मुझे सफलता मिलेगी। वह इन शब्दों के लिए मानो प्रतीक्षा ही कर रही थी। उसने एकदम उन शब्दों को पकड़ लिया।

"बिलकुल ठीक," उसने कहा, "मैं दुनिया म बुराई को बढ़ावा न देने के बारे में आश्वस्त होना चाहती हूं।"

काफी समय तक हम लोग चुपचाप बड़ी तेजी से चलते रहे। मैंने देखा कि वह कुछ सोच रही थी और शब्द उठ-उठकर उसके अन्दर रह जाते थे। मुझे डर था कि कहीं मेरे मुंह से ऐसा कोई वाक्य न निकल जाय, जिससे हम दोनों के भाग्यों का निपटारा हो जाय, और जब मुझे यह ध्यान [illegible] कि मार्टिन्स ने कहा था कि उसकी आंखों के ठीक [illegible] की सम्भावना है, तब किसी भयंकर [illegible] ने मुझे [illegible] लिया।

"मैं आपसे पूछना चाहती थी," आखिर वह बोली, "लेकिन मैं नहीं जानती कि उस बात को कैसे कहूं..."

सचमुच, उसे अपनी बात कहने के लिए बड़ी हिम्मत की जरूरत थी, उतनी ही, जितनी कि मुझे उसकी बात सुनने के लिए।

"क्या अन्धी स्त्री के बच्चे भी हमेशा अन्धे ही पैदा होते हैं ?" वह पूछ बैठी।

"नहीं, गरट्रूड," मैंने उत्तर दिया, "ऐसा बहुत कम होता है। वास्तव में ऐसा होने का कोई कारण नहीं।"

वह अत्यन्त आश्वस्त दिखाई दी। मैं उससे पूछना चाहता था कि इस बात को वह क्यों जानना चाहती है, पर मुझे हिम्मत नहीं हुई और मैंने आगे कहा, "लेकिन गरट्रूड बच्चे होने के लिए विवाह होना जरूरी है।"

"मुझसे ऐसा न कहिए, मैं जानती हूं कि यह सही नहीं है।"

उसकी इस बात को सुनकर मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ और मैंने प्रतिवाद करते हुए कहा, "मैंने तुम्हें वह बात बता दी, जिसे बताना मेरे लिए मुनासिब था। लेकिन यह सच है कि प्रकृति के नियम उन चीजों की अनुमति देते हैं, जिनका इन्सान और ईश्वर के कानून निषेध करते हैं।"

"आपने अक्सर मुझसे कहा है कि ईश्वर का कानून प्रेम का कानून होता है।"

"लेकिन यह प्रेम वह [illegible] है। इसके पीछे दया रहती है।"

'तो क्या आप मुझपर दया [illegible] प्रेम करते हैं ?"

"नहीं गरट्रूड, तुम जानती हो, ऐसा [illegible] है।"

"तब आप स्वीकार करते हैं कि हमारा प्रेम ईश्वर के कानून से दूर है ?"

"तुम्हारा क्या मतलब ?"

"ओह ! आप मेरा मतलब अच्छी तरह से जानते हैं, मैं क्या बताऊं !"

मैंने उसे टालने के लिए उपाय सोचा, लेकिन बेकार। मेरे हृदय की धड़कन ने मेरे सारे तर्कों को अस्त-व्यस्त कर दिया। मैंने उत्तेजित होकर कहा, "गरट्रूड, तुम सोचती हो कि तुम्हारा प्रेम गलत है ?"

उसने मेरे वाक्य को सुधारते हुए कहा, "'तुम्हारा' नहीं, 'हमारा' कहिए। मैं मानती हूं कि यह ठीक है।"

"और तब ?..."

मुझे लगा, जैसे किसी ने मेरी आवाज को रोक दिया हो। लेकिन उसने बिना सांस लिये उत्तर दिया, "पर मैं आपको प्रेम करना नहीं छोड़ सकती।"

पता नहीं, हम लोगों का घूमना किस तरह समाप्त हुआ। हम लोग इतनी तेजी से आगे बढ़े, मानो कोई हमारा पीछा कर रहा हो। उसने कसकर मेरी बांह पकड़ ली। मेरे शरीर से मेरी आत्मा इस तरह तिरोहित हो गई कि मुझे लगा, रास्ते के ज़रा-से पत्थर से टकरा कर हम लोग गिर पड़ेंगे।

१३/

१९ मई

डा० मार्टिन्स आज सवेरे आए। उनसे मालूम हुआ कि गरट्रूड का ऑपरेशन होगा। डा० रूक्स को आपरेशन की सफलता का पक्का भरोसा है और वह चाहते हैं कि गरट्रूड कुछ समय तक उनकी देख-रेख में रहे। मैं इसके लिए मना नहीं कर सकता, फिर भी मेरी कायरता देखिए कि मैंने उनसे कहा कि मुझे सोचने के लिए थोड़ा समय दीजिए। समय मैंने इसलिए भी मांगा कि मैं गरट्रूड को तैयार कर सकूं। इस सम्भावना से मेरे हृदय को खुशी से उछलना चाहिए था, लेकिन उसपर विभ्रांति का एक अकथनीय भार था। गरट्रूड को यह बताने में कि उसकी आंखों की ज्योति फिर से लौट आवेगी, मेरा दिल बैठा जा रहा था।

१९ मई (रात)

मैं गरट्रूड से मिला, पर मैंने उसे कुछ नहीं बताया। वह अकेली थी। मैं सीधा ऊपर उसके कमरे में गया और उसे अपनी बांहों में भर कर काफी देर तक हृदय से लगाये रहा। उसने मुझे रोकने का प्रयास नहीं किया और जैसे ही उसने अपना मुंह मेरी ओर को उठाया, हमारे होंठ मिल गये।

२१ मई

हे प्रभो, क्या तुमने हमारे लिए ही निशा को इतने तिमिर और सौन्दर्य में आवृत कर दिया है? वायु अनुकूल है और मैं आकाश के अनन्त मौन को बैठा-बैठा सुन रहा हूं। मेरी खुली खिड़की में से चन्द्रमा अपनी किरणें अन्दर बिखेर रहा है। ओह! सम्पूर्ण सृष्टि से ऐसे भक्ति-भाव का उदय हो रहा है कि वह वर्णनातीत उल्लास में लीन मेरे हृदय को आलोड़ित कर रहा है। मैं...मैं शान्ति के साथ प्रार्थना नहीं कर सकता। यदि प्रेम की कोई मर्यादा है तो मानव द्वारा निर्धारित की गई है, प्रभो, तुम्हारे द्वारा नहीं। मेरा प्रेम लोगों की दृष्टि में कितना ही दोषपूर्ण क्यों न हो, मैं जानना चाहता हूं कि तुम्हारी नजरों में वह कैसा है!

मैं पाप के विचार से ऊपर उठने का प्रयास कर रहा हूं; लेकिन पाप मुझे असहनीय लग रहा है, फिर भी मैं प्रभु यीशु को नहीं छोड़ूंगा। नहीं, मैं यह स्वीकार नहीं करूंगा कि गरट्रूड को प्यार करके मैं कोई पाप कर रहा हूं। मैं इस प्रेम को अपने हृदय से हटाने में तभी सफल हो सकता था, जब कि मैं अपने हृदय को ही चीर डालता। किसलिए? यदि मैंने गरट्रूड को पहले से प्यार न किया होता तब भी यह मेरा कर्तव्य था कि मैं करुणा के नाते उससे प्यार करता। उसे प्यार न करना, उसे धोखा देना होता। उसे मेरे प्यार की जरूरत थी।

हे प्रभो, मैं किसीको नहीं जानता। बस, तुम्हें जानता हूं। तुम मेरे पथ-प्रदर्शक बनो। कभी-कभी मुझे लगता है कि मेरे चारों ओर अंधेरा-ही-अंधेरा है और मैं उस ज्योति से वंचित हो

गया हूं, जो गरट्रूड को प्राप्त होनेवाली है।

मार्टिन्स उसे साथ वापस लायंगे। गरट्रूड ने मुझसे वादा करवाया है कि इससे पहले मैं उससे मिलने की कोशिश न करूं।

२२ मई

डा० मार्टिन्स का पत्र मिला है—आपरेशन सफलतापूर्वक हो गया। ईश्वर को धन्यवाद !

२४ मई

इस विचार से कि जिसने बिना देखे ही मुझे प्यार किया था, वह अब मुझे देखेगी, मुझे असहनीय बेचैनी हो रही है। क्या वह मुझे पहचान लेगी ? जिन्दगी में पहली बार मैंने अपने को आइने में देखा। यदि उसके लौटने पर मुझे यह अनुभव हुआ कि उसकी आंखों में उसके हृदय की अपेक्षा कम अनुग्रह और कम प्यार है तो मेरा क्या होगा ? हे भगवन्, कभी-कभी मैं सोचता हूं कि तुमको प्रेम करने के लिए मुझे उसके प्रेम की आवश्यकता है।

८ जून

मेरे सामने काम का अम्बार था। इसलिए ये पिछले दिन यों ही निकल गए। लेकिन प्रत्येक दिन गरट्रूड की मूर्त्ति मेरे सामने बनी रही।

गरट्रूड कल वापस आ रही है। एमिली, जिसका व्यवहार तीन हफ्तों से बहुत अच्छा रहा है और जो मेरा ध्यान बंटाने का प्रयत्न करती रही है, अपने बच्चों को जुटाकर उसके स्वागत की तैयारी कर रही है।

९ जून

गैस्पर्ड और शारलट जंगल और मैदानों में से जितने फूल

चुन सकते थे, ले आये हैं। रोज़ली ने अपने हाथ से एक केक बनाई है, जिसे सारा सुनहरे वर्क से सजा रही है। हम आशा कर रहे हैं कि गरट्रूड आज दोपहर को हमारे साथ खाना खाने आवेगी। मैं इन्तजार के समय का लिखकर उपयोग कर रहा हूं। अब ग्यारह बजे हैं। मैं बार-बार सिर उठाकर उस सड़क पर निगाह डाल लेता हूं, जिसपर से होकर डा० मार्टिन्स की गाड़ी आयगी। मैं बाहर जाकर उनसे मिलने के लोभ का संवरण कर रहा हूं। बेहतर यही होगा, खासकर एमिली के लिए, कि मैं उन लोगों का स्वागत औरों से अलग न करूं। मेरा हृदय पुलकित हो उठा है।...ओह...वे आ गये !

९ जून (संध्या)

ओह, मैं कैसे घिनौने अन्धकार में डूब गया हूं !

हे प्रभो, दया करो ! मैं उसे प्यार करना छोड़े देता हूं, पर तुम उसे मरने मत दो।

मेरी शंकाएं कितनी ठीक थीं। उसने क्या कर लिया ? वह क्या करना चाहती थी ? एमिली और सारा ने बताया है कि वे उसके साथ ग्रन्ज के दरवाजे तक गईं, जहां मदाम उसकी राह देख रही थी। वह जरूर कहीं चली गई होगी ! आखिर हुआ क्या ?

१४

मैं अपने विचारों को एक शृंखला में बांधने की कोशिश कर रहा हूं। जो विवरण उन लोगों ने दिये हैं, वे समझ में नहीं आ रहे हैं और एक-दूसरे के विरोधी हैं। मेरा दिमाग बिलकुल चकरा गया है।...मदाम का माली उसे अभी-अभी बेहोशी की हालत में लाया है। उसने बताया कि उसने गरट्रूड को नदी के किनारे घूमते हुए देखा। फिर गरट्रूड ने बाग का पुल पार किया, अनन्तर वह झुकी और अदृश्य हो गई। लेकिन चूंकि माली को पहले-पहल यह आशंका नहीं हुई कि वह गिर गई है, इसलिए वह उसकी मदद के लिए नहीं दौड़ा, जैसा कि उसे करना चाहिए था। बाद में उसने उसे छोटे बांध के पास पाया, जहां उसे धारा बहाकर ले गई थी। इसके बाद जब मैंने उसे देखा, तबतक उसे होश नहीं आया था या शायद वह फिर बेहोश हो गई थी; क्योंकि फौरन ही उपाय करने से उसे बीच में थोड़ा होश आ गया था। ईश्वर की कृपा से डा० मार्टिन्स अभी तक गये नहीं थे, पर वह समझ नहीं पा रहे थे कि गरट्रूड किस प्रकार की मूर्च्छा और थकावट में ग्रस्त हो रही है। उन्होंने उससे सवाल किये, पर बेकार। वह या तो सुन नहीं रही थी या उसने मुंह न खोलने का इरादा कर लिया था। उसे सांस लेने में कठिनाई हो रही थी और डा० मार्टिन्स

को डर था कि कहीं उसे निमोनिया न हो गया हो।

उन्होंने उसके प्लास्टर लगाने का आदेश दिया और अगले दिन फिर आने का वादा करके वह चले गये। गलती यह हो गई कि जब उसे होश में लाने की कोशिश कर रहे थे, उसे ज्यादा देर तक गीले कपड़ों में ही पड़े रहने दिया। नदी का पानी बर्फ-जैसा ठण्डा था।

आखिर मदाम उससे कुछ शब्द कहलवाने में सफल हो गई। उसके आधार पर मदाम ने बताया कि गरट्रूड कुछ फूल तोड़ना चाहती थी, जो कि बड़ी संख्या में नदी के किनारे उगे हुए थे। अभी उसे दूरी का ठीक अंदाज तो था नहीं, या यह हो सकता है कि उसने फूलों के तैरते हुए कालीन को ठोस जमीन समझ लिया हो। अचानक उसका पैर फिसल गया।

काश, मैं इस सब पर विश्वास कर पाता! यदि मैं अपने को समझा सकता कि जो कुछ हुआ वह एक दुर्घटना मात्र थी तो कितना भारी बोझ मेरे मन पर से उतर जाता। यद्यपि भोजन बड़ा आनन्ददायक था, तथापि एक अजीब-सी मुस्कराहट, जो गरट्रूड के चेहरे पर से कभी दूर नहीं हुई, मुझे लगातार बेचैन बनाती रही। एक जबर्दस्ती की मुस्कराहट मैंने इससे पहले कभी गरट्रूड के चेहरे पर नहीं देखी थी। लेकिन मैंने यह यकीन करने की पूरी कोशिश की कि यह मुस्कान उसकी नई-नई अर्जित ज्योति की मुस्कान है—एक ऐसी मुस्कान, जो मानो उसकी आंखों से अश्रुधारा के रूप में उसके चेहरे पर बह गई हो। वह हमारे उल्लास में सम्मिलित नहीं हुई। मुझे महसूस हुआ, मानो उसने एक ऐसा रहस्य खोज लिया हो, जिसे वह मुझपर अकेले

में अवश्य उद्घाटित करेगी। वह चुप रही, लेकिन उससे किसीको आश्चर्य नहीं हुआ, क्योंकि दूसरों के बीच वह ज्यादातर चुप ही रहती थी।

हे प्रभो, मैं तुमसे विनती करता हूं कि मुझे उसके अंतर की बात जान लेने दो। बिना उसे जाने मैं जीवित कैसे रह सकूंगा!... यदि वह अपना जीवन सचमुच समाप्त करना चाहती है तो निश्चय ही इसलिए कि उसने सबकुछ जान लिया है, सबकुछ देख लिया है। लेकिन वह कौन-सी भयानक वस्तु है, जो उसकी जानकारी में आई है? मैंने उससे ऐसा क्या छिपाया था, और वह आखिर कितना भयानक था कि उसने अपने प्राणों की बाजी लगा दी? उसने अचानक ऐसा क्या देखा?

मैं दो घंटे से उसके सिरहाने बैठा हुआ हूं, मेरी आंखें उसके माथे, उसके पीले गालों, किसी अपार वेदना के कारण बन्द कोमल पलकों और गीले तथा समुद्री घास की भांति उसके चारों ओर तकिये पर फैले बालों पर से हट नहीं रही है।...मैं उसकी कठिनाई से आती अव्यवस्थित सांसों को सुन रहा हूं।

१० जून

मदाम ने आज सवेरे मुझे बुला भेजा। मैं स्वयं ही उधर जाने की तैयारी कर रहा था। शान्ति से रात बिताने के बाद आखिर गरट्रूड की मूर्च्छा दूर हो गई थी। जब मैं उसके कमरे में गया, वह मुस्कराई और उसने मुझे अंदर आने और पास बैठ जाने का इशारा किया। मैंने उससे कुछ पूछने की हिम्मत नहीं की और निस्सन्देह वह मेरे सवाल करने से डर रही थी, क्योंकि उसने फौरन ही कहा, "आप उन छोटे-छोटे फूलों को क्या कहते हैं,

जिन्हें मैं नदी के पास से तोड़ना चाहती थी—वे फूल, जिनका रंग आसमानी है? क्या आप मुझसे ज्यादा सावधानी रखकर मेरे लिए उनका एक गुच्छा तोड़ लायंगे? मैं उन्हें अपने बिस्तर पर रखना चाहती हूं..."

उसके स्वर की यह बनावटी प्रसन्नता मेरे लिए भयानक थी और इसमें सन्देह नहीं कि वह स्वयं इस बात को जानती थी, क्योंकि उसने कुछ अधिक गम्भीरता के साथ कहा, "मैं इस समय आपसे बात नहीं कर सकती। मैं बहुत थक गई हूं। जाइए और मेरे लिए वे फूल तोड़ लाइए।"

एक घंटे बाद जब मैं उसके लिए फूलों का गुच्छा लेकर पहुंचा, तब मदाम ने बताया कि गरट्रूड आराम कर रही है और शाम से पहले नहीं मिल सकेगी।

मैं उससे शाम को मिला। वह लेटी हुई थी। नहीं, बिस्तर पर तकियों के सहारे बैठी हुई थी। उसके बाल अब गूंथ दिये गए थे। जो फूल मैं उसके लिए लाया था, वे मैंने उसकी वेणी में लगा दिये।

उसे बुखार हो रहा था। वह सांस मुश्किल से ले पा रही थी। मैंने अपना हाथ उसकी ओर बढ़ाया। उसने अपने गर्म-गर्म हाथों में उसे ले लिया। मैं उसके पास खड़ा रहा।

थोड़ी देर बाद वह बोली, "मुझे आपसे कुछ कहना है, क्योंकि मुझे डर है कि कहीं आज शाम को मैं मर न जाऊं। जो कुछ मैंने आपको आज सुबह बताया था, वह झूठ था। मैं फूल तोड़ना नहीं चाहती थी।...अगर मैं यह कहूं कि मैं आतमघात करना चाहती थी तो आप मुझे क्षमा कर देंगे न?"

मैं बिस्तर के पास घुटनों के बल बैठ गया। उसका दुबला-पतला हाथ अब भी मेरे हाथ में था। लेकिन वह अपना हाथ छुड़ाकर मेरा सिर सहलाने लगी। मैंने अपने आंसुओं को छिपाने और हिलकियों को दबाने के लिए अपना मुंह चादर से ढक लिया।

"क्या आप सोचते हैं कि मेरा ऐसा करना बहुत गलत था ?"

मैंने कुछ जवाब नहीं दिया तो वह कोमलता से बोली, "आप जानते हैं कि आपके हृदय और जीवन में मेरे लिए बहुत गहरी जगह है। जब मैं आपके पास वापस आई तब फौरन ही जो बात मुझे खटकी, वह यह थी कि जो जगह मैंने ली है, वह किसी और की है। उसी ने आंटी को दुखी बना दिया है। मेरा कसूर यह है कि मैंने इस बात को जल्दी ही अनुभव नहीं किया या यह सब जानते हुए भी मैंने आपको अपने को प्यार करने दिया। लेकिन जैसे ही आंटी का चेहरा मेरे सामने आया और मैंने उनके चेहरे पर हैरानी देखी, मैं यह सहन नहीं कर सकी कि मेरे कारण उनकी ऐसी हालत हो। नहीं-नहीं, आप किसी भी बात के लिए अपने को दोष मत दीजिए। लेकिन मुझे जाने दीजिए और आंटी को उनकी प्रसन्नता लौटा दीजिए।"

उसके हाथ ने मेरा सिर सहलाना बन्द कर दिया। मैंने उसके हाथ को थाम लिया और उसपर प्यार और आंसुओं की वर्षा कर दी। उसने अधीरता से हाथ खींच लिया और किसी भावना के वशीभूत होकर उसे इधर-से-उधर पटकने लगी।

"नहीं, मैं आपसे यह बात नहीं कहना चाहती थी। नहीं,

यह वह बात नहीं है, जो मैं कहना चाहती थी..." वह वाक्यों को दोहराती रही और मुझे उसके माथे पर पसीना दिखाई दिया। फिर मानो अपने विचारों को एकाग्र करने अथवा अपनी नेत्र-हीनता की पहलेवाली अवस्था को फिर से स्मरण करने के लिए उसने अपनी आंखें कुछ देर के लिए बन्द कर लीं और वह ऐसी आवाज में बोली, जो पहले बड़ी धीमी और दुखभरी थी, लेकिन उसके दुबारा आंखें खोलते ही तेज हो गई और उत्तेजना से भर उठी।

"जब आपने मुझे मेरी ज्योति लौटाई," वह बोली, "तब मेरी आंखों ने ऐसी दुनिया देखी, जिसके बारे में मैंने सपने में भी नहीं सोचा था कि वह इतनी सुन्दर हो सकती है। हां, सचमुच, मैंने दिन की रोशनी के इतने तेज, हवा के इतने शानदार और आसमान के इतने बड़े होने की कभी कल्पना ही नहीं की थी। लेकिन साथ ही मैंने इन्सान के चेहरों के इतने आकुल होने की कल्पना भी नहीं की थी। जानते हैं, जब मैं आपके घर गई तब सबसे पहली चीज मुझे क्या खटकी ?...ओह, सबसे पहले जो मुझे दीखा, वह था हमारा दोष, हमारा पाप। नहीं, यह मत कहिए कि ऐसा नहीं है। आपको प्रभु यीशु के शब्द याद हैं, 'यदि तुम अन्धे होते तो पाप न करते।' लेकिन अब मैं देखती हूं।... आइए, उठकर यहां मेरे पास बैठ जाइए। बिना रुकावट के मेरी बात सुनते जाइए। नर्सिंग होम में जो समय मैंने बिताया, उसमें मैंने बाइबिल के कुछ ऐसे पद पढ़े, अथवा यों कहिये कि दूसरों से पढ़वाकर सुने, जिन्हें मैं पहले से नहीं जानती थी और उनमें से कुछ आपने मुझे पहले कभी पढ़कर नहीं सुनाये थे। मुझे सन्त

पाल का एक उपदेश याद है, जिसे मैं सारे दिन मन-ही-मन दोहराती रही—'मैं एक समय बिना व्यवस्था के जीवित रहा, लेकिन जब आज्ञा आई और पाप फिर से जी उठा, तब मैं मर गया।"

वह बहुत ही उत्तेजित अवस्था में बोली और अन्तिम शब्दों को तो बेहद ऊंचे स्वर में, करीब-करीब चीख कर, उसने कहा। मुझे यह सोचकर बड़ी परेशानी हुई कि कहीं कमरे के बाहर किसीने उन्हें सुन न लिया हो। फिर उसने आंखें बन्द कर लीं और मानो अपने से ही कह रही हो, उसने बुदबुदा कर ये शब्द दोहराए—"पाप फिर से जी उठा और मैं मर गया।"

मैं कांप गया और मेरा हृदय किसी भय से जड़ीभूत हो गया। मैंने उसका ध्यान हटाने की कोशिश की, "तुम्हें वह पाठ किसने सुनाया था?" मैंने पूछा।

"जैक्स ने," उसने आंखें खोलकर और एकटक मुझे देखते हुए कहा, "क्या आपको पता है कि उसका मत बदल गया है?"

उसने जो कहा, उसे सहन करना मेरी सामर्थ्य से बाहर था। मैं उससे चुप हो जाने का अनुरोध करनेवाला था कि वह आगे बोल पड़ी, "मेरे रक्षक, मैं आपको बहुत दुखी कर रही हूं, लेकिन अब हमारे बीच झूठ को जगह नहीं मिलनी चाहिए। जब मैंने जैक्स को देखा तब एकदम मुझे लगा कि मैं आपको नहीं, उसे प्यार करती हूं और उसका चेहरा आप जैसा है, यानी, ठीक वैसा, जैसा कि मैंने आपके लिए सोचा था।...ओह! आपने मुझसे उसके लिए इन्कार क्यों करवाया? मैंने उससे शादी कर ली होती..."

"लेकिन गरट्रूड, तुम अब भी तो उससे शादी कर सकती हो।" मैंने व्यथित हृदय से कहा।

"वह तो अब पादरी बन रहा है," उसने तीव्रता से कहा। फिर वह सिसककर बोली, "ओह, मैं उसके सामने अपना दिल रखना चाहती हूं।" उसने एक प्रकार के उन्माद में भरकर कहा, "आप स्वयं देखिये न, मेरे लिए मरने के सिवा अब कोई रास्ता नहीं रहा है।...मुझे प्यास लगी है। किसीको बुला दीजिए। मैं सांस नहीं ले सकती। आप मेरे पास से चले जाइए। मैं एकांत चाहती हूं। ओह! मैंने आशा की थी कि आपसे बातें करके मुझे ज्यादा आराम मिलेगा। अब आपको अलविदा कहनी चाहिए। नहीं, हमें अलबिदा कहनी चाहिए। मैं अब अधिक आपके साथ रहना सहन नहीं कर सकती।"

मैं उसके पास से चला आया। मैंने मदाम से गरट्रूड के पास जाकर बैठने को कहा। उसकी उत्तेजना से मुझे भय हुआ कि कहीं कोई अनर्थ न हो जाय, लेकिन मैं अपनी उपस्थिति से उसका नुकसान होते नहीं देख सकता था। मैंने कहा कि अगर उसकी हालत बिगड़े तो मुझे बुलवा लें।

१५/

११ जून

अफसोस कि गरट्रूड को जीवित देखने का संयोग मेरे भाग्य में नहीं बदा था ! वह सारी रात बड़बड़ाती रही और पस्त होती गई। आज सुबह वह चल बसी। मरते समय उसने अनुरोध किया था कि जैक्स को तार दे दिया जाय। मदाम ने तार दे दिया। वह उसकी मृत्यु के कुछ घंटों बाद पहुंचा। उसने मुझे बहुत बुरा-भला कहा कि समय रहते पादरी को क्यों नहीं बुलवाया गया। लेकिन मैं ऐसा कैसे कर सकता था, क्योंकि मैं यह नहीं जानता था कि लोज़ान में रहने के दौरान में जैक्स के कहने पर उसने प्रोटेस्टैन्ट धर्म को अस्वीकार कर दिया था। जैक्स ने एक सांस में मुझे अपने और गरट्रूड के धर्म-परिवर्तन के बारे में बताया। इस प्रकार उन दोनों ने मुझे साथ-साथ त्याग दिया। ऐसा जान पड़ा, उनके जीवन-काल में मैंने उन्हें जो अलग कर दिया था, सो उन्होंने मुझसे बचने और ईश्वर के यहां अपने मिलने का रास्ता निकाल लिया। लेकिन मैं मानता हूं कि जैक्स का धर्म-परिवर्तन हृदय की अपेक्षा मस्तिष्क से प्रेरित है।

"पिताजी," उसने कहा, "आपके विरुद्ध आरोप लगाना शोभा की बात नहीं है, लेकिन आपकी भूल ने मेरा पथ-प्रदर्शन

किया है।"

इतना कहकर जैक्स चला गया। मैं एमिली के पास घुटनों के बल बैठ गया और उससे अपने लिए प्रार्थना करने को कहा, क्योंकि मुझे सहारे की जरूरत थी। उसने कहा—"हमारे परमपिता..." लेकिन वाक्यों के बीच में लम्बा विराम छूटता गया, जिसे हमने अपनी मौन प्रार्थना से पूरा किया।

मेरी आंखों से आंसू नहीं बहे। मुझे ऐसा जान पड़ा, मानो मेरा हृदय रेगिस्तान से भी ज्यादा सूख गया हो।

●